ऋषि प्रसाद

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु... ।
आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे । नूतनवर्ष आपके लिये मंगलमय हो... ।

– पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

द्विमासिक वर्ष : २ अंक : ३ नवम्बर – दिसम्बर १९९२

ऋषि प्रसाद

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वर्ष : २

अंक : ३

नवम्बर - दिसम्बर १९९२

तंत्री : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रु. २२
त्रिवार्षिक : रु. ६०
परदेश में वार्षिक : US $ ११ (डॉलर)
त्रिवार्षिक : US $ ३० (डॉलर)

* कार्यालय *

'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

परदेश में शुल्क भरने का पता :

International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N.J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : फोटोटेक्स्ट.
प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद-३८० ००५ ने
अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में छापकर
प्रकाशित किया।

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।

संपादकीय

नूतनवर्ष के नवप्रभात की किरणें अवनि पर उतरें उसके साथ ही गुरुदेव के ज्ञान की किरणें हमारे हृदय-मंदिर में उतरें और हमारे प्यासे दिलों को शान्ति, आनन्द, उत्साह, प्रेम व प्रसन्नता से भर दें यही शुभ कामना... 'ऋषि प्रसाद' के तमाम सदस्यों को एवं वाचकों को परमात्मा एवं संतों के आशीर्वाद मिले यही मंगल आकांक्षा...

'ऋषि प्रसाद' के इस अंक में प्रस्तुत है : नूतनवर्ष के उपलक्ष्य में पूज्यश्री का मंगल प्रवचन, विद्यार्थियों के लिए शिक्षा, योगयात्रा के दो सचोट अनुभव, स्वास्थ्य एवं जीवनशक्ति के विकास के लिए प्रयोग, माता सीता का दैवी पराक्रम, सदाचार और मिताहार की शिक्षा आदि... आदि।

विनित,
श्री योग वेदान्त सेवा समिति

*

हम गुरुसंदेश सुनाते हैं...

हम गुरुसन्देश सुनाते हैं
इसको सब कोई क्या जाने?
ये परम लाभ की बातें हैं
इसको सब कोई क्या जाने?

कोई ऐसा सुख भोग नहीं,
जिसके पीछे दु:ख रोग न हो।
कोई ऐसा संयोग नहीं,
हो जिसका कभी वियोग नहीं।
भोगी बन सब पछताते हैं,
इसको सब कोई क्या जाने?

धन पाकर जो दानी न बने,
जो सरल निरभिमानी न बने,
जो आत्मतत्त्व ज्ञानी न बने,
जो ईश्वर का ध्यानी न बने,
वो जीवन व्यर्थ बिताते हैं,
इसको सब कोई क्या जाने?

है सफल उसीका नर जीवन,
जो रहता जग में त्यागी बन।
जिसने जीता है अपना मन,
दैवी सम्पत्ति है जिसका धन,
वो महापुरुष कहलाते हैं,
इसको सब कोई क्या जाने?

जो व्यक्ति वस्तु का दास नहीं,
दोषों का जिसमें वास नहीं,
जिसमें दुर्वेश विलास नहीं,
दु:ख आते उसके पास नहीं।
वो पथिक महत पद पाते हैं
इसको सब कोई क्या जाने?

*

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज का पावन-प्रेरक सन्देश

धनतेरस, काली चौदस, दिवाली, नूतनवर्ष और भाईदूज... इन पर्वों का पुञ्ज माने दिवाली के त्यौहार। शरीर में पुरुषार्थ, हृदय में उत्साह, मन में उमंग और बुद्धि में समता... वैरभाव की विस्मृति और स्नेह की सरिता का प्रवाह... अतीत के अन्धकार को अलविदा और नूतनवर्ष के नवप्रभात का सत्कार... नया वर्ष और नयी बात... नया उमंग और नया साहस... त्याग, उल्लास, माधुर्य और प्रसन्नता बढ़ाने के दिन याने दीपावलि का पर्वपुञ्ज।

नूतनवर्ष के नवप्रभात में आत्म-प्रसाद का पान करके नये वर्ष का प्रारंभ करें...

प्रातःस्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम्
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥

'प्रातःकाल में मैं अपने हृदय में स्फुरित होनेवाले आत्म-तत्त्व का स्मरण करता हूँ। जो आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है, जो परमहंसों की अन्तिम गति है, जो तुरीयावस्थारूप है, जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं को हमेशा जानता है और जो शुद्ध ब्रह्म है, वही मैं हूँ। पंचमहाभूतों से बनी हुई यह देह मैं नहीं हूँ।'

'जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति, ये तीनों अवस्थाएँ तो बदल जाती हैं फिर भी जो चिद्घन चैतन्य नहीं बदलता उस अखण्ड आत्म-चैतन्य का मैं ध्यान करता हूँ। क्योंकि वही मेरा स्वभाव है। शरीर का स्वभाव बदलता है, मन का स्वभाव बदलता है, बुद्धि के निर्णय बदलते हैं फिर भी जो नहीं बदलता वह अमर आत्मा मैं हूँ। मैं परमात्मा का सनातन अंश हूँ।' ऐसा चिन्तन करनेवाला साधक संसार में शीघ्र ही निर्लेपभाव को, निर्लेप पद को प्राप्त होता है।

हमें सावधान करें, डाँटकर सुधारें ऐसे पुरुष के चरणों में जाना चाहिए। वाहवाही करनेवाले तो बहुत मिल जाते हैं किन्तु तुम महान बनो इस हेतु से तुम्हें सत्य सुनाकर सत्य परमात्मा की ओर आकर्षित करनेवाले, ईश्वर-साक्षात्कार के मार्ग पर ले चलनेवाले महापुरुष तो विरले ही होते हैं। ऐसे महापुरुषों का संग आदरपूर्वक एवं प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए।

चित्त की मलिनता चित्त का दोष है। चित्त की प्रसन्नता सद्गुण है। अपने चित्त को सदा प्रसन्न रखो। राग-द्वेष के पोषक नहीं किन्तु राग-द्वेष के संहारक बनो।

आत्म-साक्षात्कारी सद्गुरु के सिवाय अन्य किसीके ऊपर अति विश्वास न करो एवं अति सन्देह भी न करो।

अपने से छोटे लोगों से मिलो तब करुणा रखो। अपने से उत्तम व्यक्तियों से मिलो तब हृदय में आदर रखो। आत्मवेत्ता सत्पुरुषों से मिलो तब हृदय में श्रद्धा, भक्ति एवं विनय रखो। अपने समकक्ष लोगों से व्यवहार करने का प्रसंग आने पर हृदय में भगवान राम की तरह प्रेम रखो। अति उद्दण्ड लोग तुम्हारे संपर्क में आकर अगर बदल न पायें तो ऐसे लोगों से थोड़े दूर रहकर अपना समय बचाओ। नौकरों को एवं आश्रित जनों को स्नेह दो। साथ ही साथ उन पर निगरानी रखो।

जो तुम्हारे मुख्य कार्यकर्त्ता हों, तुम्हारे धंधे-रोजगार के रहस्य जानते हों, तुम्हारी गुप्त बातें जानते हों उनके थोड़े बहुत नखरे भी सावधानीपूर्वक सहन करो।

अति भोलेभाले भी मत बनो और अति चतुर भी

मत बनो । अति भोलेभाले बनोगे तो लोग तुम्हें मूर्ख जानकर धोखा देंगे । अति चतुर बनोगे तो संसार का आकर्षण बढ़ेगा।

लालची, मूर्ख और झगड़ालू लोगों के संपर्क में नहीं आना । त्यागी, तपस्वी और परहितपरायण लोगों की संगति नहीं छोड़ना।

कार्य सिद्ध होने पर, सफलता मिलने पर गर्व नहीं करना। कार्य में विफल होने पर विषाद के गर्त्त में नहीं गिरना।

प्रेम के बल पर ही मनुष्य सुखी हो सकता है। बन्दूक पर हाथ रखकर अगर वह निश्चिन्त रहना चाहे तो वह मूर्ख है। जहाँ प्रेम है वहाँ ज्ञान की आवश्यकता है। सेवा में ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान में प्रेम की आवश्यकता है। विज्ञान को तो आत्मज्ञान एवं प्रेम, दोनों की आवश्यकता है।

शस्त्रधारी पुरुष से शस्त्र रहित को वैर नहीं करना चाहिए । राज़ जाननेवाले से कसूरमंद (अपराधी) को वैर नहीं करना चाहिए। स्वामी के साथ अनुचर को, शठ और दुर्जन के साथ सात्त्विक पुरुष को एवं धनी के साथ कंगाल पुरुष को वैर नहीं करना चाहिए । भाट के साथ शूरवीर को, कवि के साथ राजा को, वैद्य के साथ रोगी को एवं भण्डारी के साथ भोजन खानेवाले को भी वैर नहीं करना चाहिए । इन नौ लोगों से जो वैर या विरोध नहीं करता वह सुखी रहता है ।

अति संपत्ति की लालच भी नहीं करना और संसार-व्यवहार चलाने के लिए लापरवाह भी नहीं होना । अक्ल, होशियारी, पुरुषार्थ एवं परिश्रम से धनोपार्जन करना चाहिए। धनोपार्जन के लिए पुरुषार्थ अवश्य करें किन्तु धर्म के अनुकूल रहकर। गरीबों का शोषण करके इकट्ठा किया हुआ धन सुख नहीं देता।

लक्ष्मी उसीको प्राप्त होती है जो पुरुषार्थ करता है, उद्योग करता है। आलसी को लक्ष्मी त्याग देती है। जिसके पास लक्ष्मी होती है उसको बड़े-बड़े लोग मान देते हैं। हाथी लक्ष्मी को माला पहनाता है।

लक्ष्मी के पास उल्लू दिखाई देता है। इस उल्लू द्वारा निर्दिष्ट है कि निगुरों के पास लक्ष्मी के साथ ही साथ अहंकार का अन्धकार भी आ जाता है। उल्लू सावधान करता है कि सदा अच्छे पुरुषों का ही संग करना चाहिए। हमें सावधान करें, डाँटकर सुधारें ऐसे पुरुष के चरणों में जाना चाहिए ।

वाहवाही करनेवाले तो बहुत मिल जाते हैं किन्तु तुम महान बनो इस हेतु से तुम्हें सत्य सुनाकर सत्य परमात्मा की ओर आकर्षित करनेवाले, ईश्वर-साक्षात्कार के मार्ग पर ले चलनेवाले महापुरुष तो विरले ही होते हैं। ऐसे महापुरुषों का संग आदरपूर्वक एवं प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए।

रामचन्द्रजी बड़ों से मिलते तब विनम्र भाव से मिलते थे, छोटों से मिलते तब करुणा से मिलते थे। अपने समकक्ष लोगों से मिलते तब स्नेहभाव से मिलते थे और त्याज्य लोगों की उपेक्षा करते थे।

जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए यह शास्त्रीय नियम आपके जीवन में आना ही चाहिए ।

हररोज प्रभात में शुभ संकल्प करो :

'मुझे जैसा होना है ऐसा मैं हूँ ही। मुझमें कुछ कमी होगी तो उसे मैं अवश्य निकालूंगा।'

एक बार प्रयत्न करो... दो बार करो... तीन बार करो... अवश्य सफल बनोगे।

'मेरी मृत्यु कभी होती ही नहीं । मृत्यु होती है तो देह की होती है...' ऐसा सदैव चिन्तन किया करो।

बम बनाने में अरबों रूपये बरबाद हो रहे हैं। ... और वे ही बम मनुष्य जाति के विनाश में लगाये जाएँ ! नेताओं और राजाओं के अपेक्षा किसी आत्मज्ञानी गुरु के हाथ में बागडोर आ जाय तो विश्व नन्दनवन बन जाय।

'मैं कभी दुर्बल नहीं होता। दुर्बल और सबल शरीर होता है। मैं तो मुक्त आत्मा हूँ... चैतन्य परमात्मा का सनातन अंश हूँ... मैं सद्गुरु तत्त्व का हूँ। यह संसार मुझे हिला नहीं सकता, झकझोर नहीं सकता । झकझोरा जाता है शरीर, हिलता है मन। शरीर और मन को देखनेवाला मैं चैतन्य आत्मा हूँ। घर का विस्तार, दुकान का विस्तार, राज्य की सीमा या राष्ट्र की सीमा बढ़ाकर मुझे बड़ा कहलाने की आवश्यकता नहीं है।

मैं तो असीम आत्मा हूँ। सीमाएँ सब माया में हैं, अविद्या में हैं। मुझ आत्मा में तो असीमता है । मैं तो मेरे इस असीम राज्य की प्राप्ति करूँगा और निश्चिन्त जीऊँगा। जो लोग सीमा सुरक्षित करके, अहंकार बढ़ाकर जी गये; वे लोग भी आखिर सीमा छोड़कर गये। अत: ऐसी सीमाओं का आकर्षण मुझे नहीं है । मैं तो असीम आत्मा में ही स्थित होना चाहता हूँ...।'

'आज वर्ष के प्रथम दिन जो व्यक्ति हर्ष में रहता है उसका सारा वर्ष हर्ष में बीतता है। जो व्यक्ति चिन्ता और शोक में रहता है उसका सारा वर्ष ऐसा ही जाता है।'

ऐसा चिन्तन करनेवाला साधक कुछ ही समय में असीम आत्मा का अनुभव करता है।

प्रेम के बल पर ही मनुष्य सुखी हो सकता है। बन्दूक पर हाथ रखकर अगर वह निश्चिन्त रहना चाहे तो वह मूर्ख है। जहाँ प्रेम है वहाँ ज्ञान की आवश्यकता है। सेवा में ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान में प्रेम की आवश्यकता है। विज्ञान को तो आत्मज्ञान एवं प्रेम, दोनों की आवश्यकता है।

मानव बन मानव का कल्याण करो । बम बनाने में अरबों रूपये बरबाद हो रहे हैं। ... और वे ही बम मनुष्य जाति के विनाश में लगाये जाएँ! नेताओं और राजाओं के अपेक्षा किसी आत्मज्ञानी गुरु के हाथ में बागडोर आ जाय तो विश्व नन्दनवन बन जाय।

हम उन ऋषियों को धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने दिवाली जैसे पर्वों का आयोजन करके मनुष्य से मनुष्य को नजदीक लाने का प्रयास किया है, मनुष्यों में परस्पर हिलमिलकर रहने का प्रचार किया है, मनुष्य की सुषुप्त शक्तियों को जगाने का सन्देश दिया है। जीवात्मा को परमात्मा से एक होने के लिए भिन्न-भिन्न उपाय खोजकर उनको समाज में गाँव-गाँव और घर-घर में पहुँचाने के लिए उन आत्मज्ञानी महापुरुषों ने पुरुषार्थ किया है। उन महापुरुषों को आज हम हजार-हजार प्रणाम करते हैं ।

यो यादृशेन भावेन
तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर ।
हर्षदैन्यादिरूपेण
तस्य वर्षं प्रयाति वै ॥

'आज वर्ष के प्रथम दिन जो व्यक्ति हर्ष में रहता है उसका सारा वर्ष हर्ष में बीतता है । जो व्यक्ति चिन्ता और शोक में रहता है उसका सारा वर्ष ऐसा ही जाता है।'

जैसी सुबह बीतती है ऐसा ही दिन बीतता है। वर्ष की सुबह माने नूतन वर्ष का प्रथम दिन। यह प्रथम दिन जैसा बीतता है ऐसा ही सारा वर्ष बीतता है।

व्यापारी सोचता है कि वर्ष भर में कौन-सी चीजें दुकान में बेकार पड़ी रह गई, कौन-सी चीजों में घाटा आया और कौन-सी चीजों में मुनाफा हुआ। जिन चीजों में घाटा आता है उन चीजों का व्यापार वह बन्द कर देता है। जिन चीजों में मुनाफा होता है उन चीजों का व्यापार वह बढ़ाता है।

इसी प्रकार भक्तों एवं साधकों को सोचना चाहिए कि वर्ष भर में कौन-से कार्य करने से हृदय उद्विग्न बना, अशान्त हुआ, भगवान, शास्त्र एवं गुरुदेव के आगे लज्जित होना पड़ा अथवा अपनी अन्तरात्मा नाराज हुई । ऐसे कार्य, ऐसे धन्धे, ऐसे कर्म, ऐसी दोस्ती बन्द कर देनी चाहिए। जिन कर्मों से अन्तरात्मा सन्तुष्ट हो, जिन कर्मों के लिए शास्त्र सहमत हों, जिन कर्मों के लिए सद्गुरु सहमत हों और जिन कर्मों से अपनी अन्तरात्मा प्रसन्न हो, भगवान प्रसन्न हों, ऐसे कर्म बढ़ाने का संकल्प कर लो।

आप धर्मानुष्ठान और निष्काम कर्म से विश्व में उथलपुथल कर सकते हैं। योग से दैवी शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं। उपासना से मनभावन इष्टदेव को प्रकट कर सकते हैं। आत्मज्ञान से अज्ञान मिटाकर राजा खट्वांग, शुकदेवजी और राजर्षि जनक की तरह जीवन्मुक्त भी बन सकते हैं।

आज का दिन वर्ष रूपी डायरी का प्रथम पन्ना है । गत वर्ष की डायरी का सिंहावलोकन करके जान लो कि कितना लाभ हुआ और कितनी हानि हुई । आगामी वर्ष के लिए थोड़े निर्णय कर लो कि अब ऐसे-ऐसे

जीऊँगा । आप जैसे बनना चाहते हैं ऐसे भविष्य में बनेंगे, ऐसा नहीं । आज से ही ऐसा बनने की शुरूआत कर दो । 'मैं अभी से ही ऐसा हूँ' यह चिन्तन करो । ऐसे न होने में जो बाधाएँ हों उन्हें हटाते जाओ तो आप परमात्मा का साक्षात्कार भी कर सकते हो। कुछ भी असंभव नहीं है ।

आज नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में पक्का संकल्प कर लो कि सुख-दुःख में, लाभ-हानि में और मान-अपमान में सम रहेंगे। जो भी व्यवहार करेंगे वह तत्परता से करेंगे । ज्ञान से युक्त होकर सेवा करेंगे, मूर्खता से नहीं ।

आप धर्मानुष्ठान और निष्काम कर्म से विश्व में उथलपुथल कर सकते हैं। योग से दैवी शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं। उपासना से मनभावन इष्टदेव को प्रकट कर सकते हैं। आत्मज्ञान से अज्ञान मिटाकर राजा खट्वांग, शुकदेवजी और राजर्षि जनक की तरह जीवन्मुक्त भी बन सकते हैं।

आज नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में पक्का संकल्प कर लो कि सुख-दुःख में, लाभ-हानि में और मान-अपमान में सम रहेंगे। संसार की उपलब्धियों एवं अनुपलब्धियों में खिलौनाबुद्धि करके अपनी आत्मा में आयेंगे। जो भी व्यवहार करेंगे वह तत्परता से करेंगे । ज्ञान से युक्त होकर सेवा करेंगे, मूर्खता से नहीं। ज्ञान-विज्ञान से तृप्त बनेंगे । जो भी कार्य करेंगे वह तत्परता से एवं सतर्कता से करेंगे।

रोटी बनाते हो तो बिल्कुल तत्परता से बनाओ। खानेवालों की तन्दुरुस्ती और रुचि बनी रहे ऐसा भोजन बनाओ। कपड़े ऐसे धोओ कि साबुन अधिक खर्च न हो, कपड़े जल्दी फटे नहीं और कपड़ों में चमक भी आ जाय । झाड़ू ऐसा लगाओ कि मानो पूजा कर रहे हो । कहीं कचरा न रह जाय। बोलो ऐसा कि जैसा रामजी बोलते थे। वाणी सारगर्भित, मधुर, विनययुक्त, दूसरों को मान देनेवाली और अपने को अमानी रखनेवाली

दीन-हीन, गरीब और भूखे को अन्न देने का अवसर मिल जाय तो चुको मत । स्वयं भूखे रहकर भी कोई सचमुच भूखा हो उसे खिला दो तो आपको भूखा रहने में भी अनूठा मजा आयेगा। उस भोजन खानेवाले की तो चार छः घण्टों की भूख मिटेगी लेकिन आपकी अन्तरात्मा की तृप्ति से आपकी युगों-युगों की और अनेक जन्मों की भूख मिट जाएगी ।

हो। ऐसे लोगों का सब आदर करते हैं।

अपने से छोटे लोगों के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार करो। दीन-हीन, गरीब और भूखे को अन्न देने का अवसर मिल जाय तो चुको मत। स्वयं भूखे रहकर भी कोई सचमुच भूखा हो उसे खिला दो तो आपको भूखा रहने में भी अनूठा मजा आयेगा। उस भोजन खानेवाले की तो चार छः घण्टों की भूख मिटेगी लेकिन आपकी अन्तरात्मा की तृप्ति से आपकी युगों-युगों की और अनेक जन्मों की भूख मिट जाएगी।

अपने दुःख में रोनेवाले ! मुस्कुराना सीख ले ।
दूसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले ।
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं ।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले ॥

सेवा से आप संसार के काम आते हैं। प्रेम से आप भगवान के काम आते हैं। दान से आप पुण्य और औदार्य का सुख पाते हैं और एकान्त व आत्म-विचार से दिलबर का साक्षात्कार करके आप विश्व के काम आते हैं।

लापरवाही एवं बेवकूफी से किसी कार्य को बिगड़ने मत दो । सब कार्य तत्परता, सेवाभाव और उत्साह से करो। भय को अपने पास भी मत फरकने दो । कुलीन राजकुमार की तरह गौरव से कार्य करो।

बढ़िया कार्य, बढ़िया समय और बढ़िया व्यक्ति का इन्तजार मत करो। अभी जो समय आपके हाथ में है वही बढ़िया समय है। वर्तमान में आप जो कार्य करते हैं उसे तत्परता से, बढ़िया ढंग से करें। जिस व्यक्ति से मिलते हैं उसकी गहराई में परमेश्वर को देखकर व्यवहार करें। बढ़िया व्यक्ति वही है जो आपके सामने है।

बढ़िया काम वही है जो शास्त्र-संमत है और अभी आपके हाथ में है।

अपने पूरे प्राणों की शक्ति लगाकर, पूर्ण मनोयोग के साथ कार्य करो। कार्य पूरा कर लेने के बाद कर्त्तापन को झाड़ फेंक दो। अपने अकर्त्ता, अभोक्ता, शुद्ध, बुद्ध, सच्चिदानन्द स्वरूप में गोता लगाओ।

कार्य करने की क्षमता बढ़ाओ। कार्य करते हुए भी अकर्त्ता, अभोक्ता आत्मा में प्रतिष्ठित होने का प्रयास करो।

ध्यान, भजन, पूजन का समय अलग और व्यवहार का समय अलग... ऐसा नहीं है। व्यवहार में भी परमार्थ की अनुभूति करो। व्यवहार और परमार्थ सुधारने का यही उत्तम मार्ग है।

ध्यान, भजन, पूजन का समय अलग और व्यवहार का समय अलग... ऐसा नहीं है। व्यवहार में भी परमार्थ की अनुभूति करो। व्यवहार और परमार्थ सुधारने का यही उत्तम मार्ग है।

राग-द्वेष क्षीण करने से सामर्थ्य आता है। राग-द्वेष क्षीण करने के लिए 'सब आपके हैं... आप सबके हैं...' ऐसी भावना रखो। 'सबके शरीर पंचमहाभूतों के हैं। उनका अधिष्ठान, आधार प्रकृति है। प्रकृति का आधार मेरा आत्मा-परमात्मा एक ही है। ॐ... ॐ... ॐ...' ऐसा सात्त्विक स्मरण व्यवहार और परमार्थ में चार चाँद लगा देता है।

सदैव प्रसन्न रहो। मुख को कभी मलिन मत होने दो। निश्चय कर लो कि शोक ने आपके लिए जगत में जन्म ही नहीं लिया है। आपके नित्य आनन्द स्वरूप में, सिवाय प्रसन्नता के चिन्ता को स्थान ही कहाँ है?

सबके साथ प्रेमपूर्ण पवित्रता का व्यवहार करो। व्यवहार करते समय यह याद रखो कि जिसके साथ आप व्यवहार करते हैं उसकी गहराई में आपका ही प्यारा प्रियतम बिराजमान है। उसीकी सत्ता से सबकी धड़कनें चल रही हैं। किसीके दोष देखकर उससे घृणा न करो, न उसका बुरा चाहो। दूसरों के पापों को प्रकाशित करने के बदले सुदृढ़ बनकर उन्हें ढँको।

सबके साथ प्रेमपूर्ण पवित्रता का व्यवहार करो। व्यवहार करते समय यह याद रखो कि जिसके साथ आप व्यवहार करते हैं उसकी गहराई में आपका ही प्यारा प्रियतम बिराजमान है। उसीकी सत्ता से सबकी धड़कनें चल रही हैं।

सदैव ख्याल रखो कि सारा ब्रह्माण्ड एक शरीर है, सारा संसार एक शरीर है। जब तक आप हरएक से अपनी एकता का भान वा अनुभव करते रहेंगे तब तक सभी परिस्थितियाँ और आसपास की चीजें, हवा और सागर की लहरें तक आपके पक्ष में रहेंगी। प्राणीमात्र आपके अनुकूल बरतेगा। आप अपने को ईश्वर का सनातन अंश, ईश्वर का निर्भीक और स्वावलम्बी सनातन सपूत समझें।

सुख धन से नहीं, धर्म से होता है। सुखी वह होगा जिसके जीवन में धर्म होगा, त्याग होगा, संयम होगा।

पुरुषार्थ और पुण्यों की वृद्धि से लक्ष्मी आती है, दान, पुण्य और कौशल से बढ़ती है, संयम और सदाचार से स्थिर होती है। पाप, ताप और भय से आयी हुई लक्ष्मी कलह और भय पैदा करती है एवं दस वर्ष में नष्ट हो जाती है। जैसे रूई के गोदाम में आग लगने से सब रूई नष्ट हो जाती है ऐसे ही गलत साधनों से आये हुए धन के ढेर एकाएक नष्ट हो जाते हैं। उद्योग, सदाचार, धर्म और संयम से सुख देनेवाला धन मिलता है। वह धन 'बहुजन-सुखाय' प्रवृत्ति करवाकर लोक-परलोक में सुख देता है एवं चिर-स्थायी होता है।

नूतनवर्ष के सुमंगल प्रभात में शुभ संकल्प करो कि जीवन में से तुच्छ इच्छाओं को, विकारी आकर्षणों को और दुःखद चिन्तन को अलविदा देंगे। सुखद चिन्तन, निर्विकारी नारायण का ध्यान और आत्मवेत्ताओं के उन्नत विचारों को अपने हृदय में स्थान देकर सर्वांगीण उन्नति करेंगे।

अपने समय को हल्के काम में लगाने से हल्का फल मिलता है, मध्यम काम में लगाने से मध्यम फल मिलता है, उत्तम काम में लगाने से उत्तम फल मिलता है। परम श्रेष्ठ परमात्मा में लगाने से हम परमात्मा-स्वरूप को पा लेते हैं।

धन को तिजोरी में रख सकते हैं किन्तु समय को नहीं रख सकते । ऐसे मूल्यवान समय को जो बरबाद करता है वह स्वयं बरबाद हो जाता है। अतः सावधान ! समय का सदुपयोग करो ।

सुख धन से नहीं, धर्म से होता है । सुखी वह होगा जिसके जीवन में धर्म होगा, त्याग होगा, संयम होगा ।

साहसी बनो। धैर्य न छोड़ो । हजार बार असफल होने पर भी ईश्वर के मार्ग पर एक कदम और रखो... फिर से रखो... फिर से रखो। अवश्य सफलता मिलेगी । 'संशयात्मा विनश्यति।' अतः संशय निकाल दो ।

अज्ञान की कालिमा को ज्ञानरश्मि से नष्ट कर आनन्द के महासागर में कूद पड़ो। वह सागर कहीं बाहर नहीं है, आपके दिल में ही है। दुर्बल विचारों और तुच्छ इच्छाओं को कुचल डालो। दुःखद विचारों और मान्यताओं का दिवाला निकालकर आत्म-मस्ती का दीप जलाओ । खोज लो उन आत्मारामी संतों को जो आपके सच्चे सहायक हैं।

सागर की लहरें सागररूप हैं । चित्त की लहरें चैतन्यरूप हैं। उस चैतन्यरूप का चिन्तन करते-करते अपने अथाह आत्म-सागर में गोता मारो।

खून पसीना बहाता जा।
तान के चादर सोता जा।
यह नाव तो हिलती जायेगी।
तू हँसता जा या रोता जा ॥

संसार की लहरियाँ तो बदलती जायेंगी इसलिए हे मित्र ! हे मेरे भैया ! हे वीर पुरुष! रोते, चीखते, सिसकते जिन्दगी क्या बिताना? मुस्कुराते रहो... हरिगीत गाते रहो... हरिरस पाते रहो... यही शुभ कामना ।

आपके अंतर के घर में से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के कचरे को प्रेम, प्रकाश, साहस, ॐकार के गुँजन तथा गुरुमंत्र के स्मरण से भगा देना। अपने हृदय में प्रभुप्रेम भर देना। नित्य नवीन, नित्य नूतन आत्म-प्रकाश और प्रेम-प्रसाद से हृदय में बसे हुए हरि को स्नेह से सदा पूजते रहना। जहाँ नारायण हैं वहाँ महालक्ष्मी भी हैं।

पुरुषार्थ और पुण्यों की वृद्धि से लक्ष्मी आती है, दान, पुण्य और कौशल से बढ़ती है, संयम और सदाचार से स्थिर होती है । पाप, ताप और भय से आयी हुई लक्ष्मी कलह और भय पैदा करती है ।

रोज सुबह नींद से उठते समय अपने आरोग्य के बारे में, सत्प्रवृत्तियों के बारे में और जीवनदाता के साक्षात्कार के बारे में, प्रार्थना, प्रेम और पुरुषार्थ का संकल्प चित्त में दुहराओ। अपने दोनों हाथ देखकर मुँह पर घुमाओ और बाद में धरती पर कदम रखो। इससे हर क्षेत्र में कदम आगे बढ़ते हैं।

विश्वास रखो : आनेवाला कल आपके लिए अत्यंत मंगलमय होगा । सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु ।

आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे। यह नूतनवर्ष आपके लिए मंगलमय हो।

*

सुमति और सम्पत्ति

लक्ष्मीचंद सेठ को सपना आया। स्वप्न में माता लक्ष्मीजी ने कहा कि :

"तुम्हारा पुण्य खत्म हो गया है। मैं अब जानेवाली हूँ । लक्ष्मी-प्राप्ति के सिवाय कोई भी वरदान माँग ले ।"

सेठ ने कहा : "माताजी ! मौका दीजिए। कल पधारने की कृपा करें, मैं जरा सलाह कर लूँ।"

सुबह में सेठ उठे। अपने कुटुम्बियों को सलाह करने के लिए बुलाया। चार बेटे थे, पत्नी थी और पुत्रवधुएँ थीं।

सेठ : "लक्ष्मीजी जा रही हैं। अपना पुण्य खत्म हो रहा है। लक्ष्मीमाता ने वरदान माँगने को कहा है मगर लक्ष्मी को छोड़कर कुछ भी माँगना है ।"

बड़ी बहू ने कहा कि :

"माताजी से कह दो तिजोरी हीरे-मोतियों से भर दो ।"

मँझली बहू ने कहा कि : "जब लक्ष्मीजी जा रही हैं तो हीरे-मोती कंकड़ पत्थर हो जायेंगे । जब लक्ष्मीजी आनेवाली होती हैं तब मिट्टी में से भी धन हो जाता है। तिजोरियाँ हीरे-जवाहरातों से भरवाने से काम नहीं चलेगा।"

दूसरी बहू ने कहा कि :

"ऐसा माँगो कि अपने साथ जो शत्रुता करते हैं, अपने जो दुश्मन हैं उनका सत्यानाश करके जावें।"

तीसरी बहू बड़े घर की थी। बड़ा घर वह नहीं जो बड़ी ईमारत हो। बड़ा घर वह है जिसमें बड़े में बड़ा जो परमात्मा है उसके प्यारों का सत्संग होता हो ।

उस बच्ची ने कहा कि :

"ससुरजी ! अगर आप आज्ञा दें तो मैं कुछ कहूँ ।"

सेठजी : "बेटी, बोलो।"

बहू : "लक्ष्मीजी से शत्रुओं का नाश भी न माँगें और हीरे-जवाहरातों की तिजोरियाँ भरने का वरदान भी न माँगें। मेरी तो विनंती है कि लक्ष्मीजी से कहें : "लक्ष्मीमाता ! अगर आप वरदान देना ही चाहती हैं तो यह दो बात हम माँगते हैं : एक तो हमारे कुटुम्ब में एकता रहे और हमें सत्संग मिलता रहे। जब सत्संग

बड़ा घर वह नहीं जो बड़ी ईमारत हो। बड़ा घर वह है जिसमें बड़े में बड़ा जो परमात्मा है उसके प्यारों का सत्संग होता हो ।

मिलता रहेगा तो सुमति होगी। **'जहाँ सुमति वहाँ सम्पत्ति नाना ।'**

लक्ष्मीजी को अकेला नहीं, नारायण के साथ यहाँ रहना पड़ेगा।

जो नारायण के सहित लक्ष्मी है वह कुमार्ग में नहीं जाने देती।

एक होता है वित्त, दूसरा होता है धन, तीसरी होती है लक्ष्मी और चौथी होती है महालक्ष्मी। वह महालक्ष्मी हमारे घर में आयेगी। इसलिए तो हम लोग महालक्ष्मी की पूजा करते हैं कि हमारे घर में धन आये, वह महालक्ष्मी ही आये । महालक्ष्मी नारायण से मिलाने का काम करेगी। वह धन कुमार्ग में नहीं ले जायेगा, सन्मार्ग में ले जायेगा ।"

सेठजी ने दूसरे दिन स्वप्न में माताजी से यही वरदान माँगा। कुटुम्ब में एकता रहे और सत्संग मिलता रहे ।

माताजी बड़ी प्रसन्न हुई। वह बोली : "ऐसा कुछ माँग लिया है कि, अब तो मुझे सदैव तुम्हारे कुटुम्ब में वास करना पड़ेगा।"

जहाँ संप और सत्संग है वहाँ नारायण का वास है । जहाँ नारायण का वास है वहाँ नारायण की अर्धांगिनी लक्ष्मी तो छाया की तरह रहेगी ही।

*

सेवाधारी साधक-नियुक्ति

भारत की प्रभु-प्रेमी और संत-प्रेमी जनता में कई लोग 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनकर जीवन को मधुर बनाने के लिए तैयार होते हैं किन्तु सदस्य-शुल्क भेजने में आलस्य के कारण सदस्य नहीं बन पाते। उनको सत्साहित्य के प्रति अंगुलीनिर्देश करनेवाला एवं सदस्य बनानेवाला सेवाभावी एजेन्ट मिल जाय तो ऐसे सज्जन आसानी से 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बन सकते हैं।

आपके गाँव में, मोहल्ले में या इलाके में 'ऋषि प्रसाद' का कोई एजेन्ट है या नहीं इसकी झंझट में पड़े बिना आप स्वयं ही इस सत्कार्य में सहयोगी बन जायें और जनता को 'ऋषि प्रसाद' के प्रति अभिमुख बनाकर सत्कार्य का पुण्यार्जन करें। अपने अपने इलाके में 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनाकर उन्हें अंक पहुँचाने की अथवा केवल सदस्य बनाने की सेवा उठाने के इच्छुक, सेवाभावी एजेन्ट बनने के उत्साही सज्जन कार्यालय का संपर्क करें । अभी निम्न स्थानों में ऐसे सेवाभावी एजेन्टों की आवश्यकता है :

(१) गुजरात राज्य : अहमदाबाद शहर में मणीनगर, आंबावाडी, साबरमती, डी. केबीन, सरखेज, साणंद, सादरा, बावळा, देहेगाम, धंधुका, बारेजड़ी। **गांधीनगर :** रांधेजा, चाँदखेडा।

(अनु. पेज नं. १४ पर)

जीवनशक्ति

– पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

मनुष्य की जीवनशक्ति जितने अंश में विकसित होती है, उतना ही वह आदमी हर क्षेत्र में सफल होता है। जीवनशक्ति जिन कारणों से विकसित होती है, वे कारण अगर समझ में आ जाय तो जीवन की तमाम गुत्थियाँ खोलने में आदमी सफल होता है और जिन कारणों से जीवनशक्ति का ह्रास होता है वे कारण अगर समझ में आ जाय तो ह्रास के कारणों को समझनेवाला ह्रास से बच जाता है। विकास के कारणों को समझनेवाला उसका फायदा उठाता है। कोई चोट लगती है तो घाव दवाइयों से नहीं भरता, घाव जीवनशक्ति से भरता है। दवाइयाँ तो बेक्टेरिया- कीटाणु आदि का प्रकोप न हो, इसकी सुरक्षा करती हैं ।

हमारे कुछ क्रिया-कलाप से जीवनशक्ति का विकास होता है, और कुछ ऐसे क्रिया-कलाप हैं, जिनसे जीवनशक्ति का ह्रास होता है। प्राकृतिक जीवन जीने से जीवनशक्ति का विकास होता है। इन्द्रियसंयम करके ईश्वराभिमुख होने से जीवनशक्ति का विकास होता है, इन्द्रियों को छूटछाट देकर परफ्यूम आदि का उपयोग करने से जीवनशक्ति का नाश होता है। जो परफ्यूम आदि का ज्यादा उपयोग करते हैं, उनका मन और इन्द्रियाँ उनके काबू में नहीं रह सकते।

गीताकार भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

'पुण्योगंधः पृथिव्यां च... ।'

'पृथ्वी में पुण्यशाली गंध मैं हूँ ।'

सुगंध नहीं कहा। सुगंध तो परफ्यूम में हो सकती है। पृथ्वी में पुण्यशाली गंध है। जिस गंध से मन प्रसन्न हो और सात्त्विकता की तरफ जाय वह पुण्यशाली गंध है और भगवान कहते हैं कि 'वह मैं हूँ।' परफ्यूम की सुगंध पुण्यशाली गंध नहीं है। क्योंकि वह जीवनशक्ति का ह्रास करती है। वह दुःखदायी गंध है । जितने भी परफ्यूम हैं, जीवनशक्ति को क्षीण करनेवाले हैं, विकास करनेवाले नहीं।

पहले के जमाने के लोग संयमी और कुदरती जीवन जीते थे इसलिए हमारे बापदादाओं की आयु लम्बी रहती थी। अभी हम शहरों में तंग बस्ती में रहते हैं इसलिए हमें शुद्ध ऑक्सिजन नहीं मिलता। दुर्बल मन के व्यक्तियों के बीच जीते हैं, तो हमारी जीवनशक्तियाँ नष्ट होती हैं। हम जो भी श्वास लेते हैं वह समष्टि से लेते हैं और समष्टि में जैसे लोग बसते हैं, उन्हीं के आंदोलनों का मिश्रण हमारे सांसों में आता है और उसका हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए बुद्धिमान लोग एकांत में चले जाते हैं अथवा खुले वातावरण में मौका पाकर चले जाते हैं। बुद्धिमान माताएँ अपनी गोद में बच्चा रोता है तो तुरंत बाहर आती हैं, प्रांगण में टहलती हैं। खुल्ली हवा में आने से बच्चे की जीवनशक्ति को सहायता मिलती है और बच्चे का रुदन बंद हो जाता है। उसके चित्त की खिन्नता और अशांति दूर हो जाती है। योगी पुरुष भी हिमालय में, नर्मदा किनारे, सरिता के किनारे रहना पसंद करते हैं। क्योंकि वहाँ खुल्ली हवा है । सूर्य की किरणें मिल रही हैं, चँदा की चाँदनी मिल रही है। इससे जीवनशक्ति का विकास होता है। जीवनशक्ति

हम दुर्बल मन के व्यक्तियों के बीच जीते हैं, तो हमारी जीवनशक्तियाँ नष्ट होती हैं । हम जो भी श्वास लेते हैं वह समष्टि से लेते हैं और समष्टि में जैसे लोग बसते हैं, उन्हीं के आंदोलनों का मिश्रण हमारे सांसों में आता है और उसका हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है । इसलिए बुद्धिमान लोग एकांत में चले जाते हैं अथवा खुले वातावरण में मौका पाकर चले जाते हैं ।

विकसित है तो योग में और योगेश्वर को पाने में सफलता मिलती है। जीवनशक्ति एक Energy है। जैसे विद्युत (Electricity) है, जिससे आप बर्फ भी बना सकते हैं, आईसक्रीम भी बना सकते हैं और कतलखाना (Slaughter house) भी चला सकते हैं, यह आप पर निर्भर है । पावरहाउस की शक्ति तो शक्ति ही है। ऐसे ही जीवनशक्ति आपके अंदर काम करती है । गलत कारणों से जीते हैं, गलत निमित्तों से जीते हैं या सोचते हैं तो जीवनशक्ति का बिगाड़ व ह्रास होता है। ठीक ढंग से जीते हैं तो जीवनशक्ति का सदुपयोग होता है । जीवनशक्ति का विकास करने की तरकीब आ जाय तो वह विकसित होती है। जब हम प्रेम से भरते हैं, धन्यवाद से भरते हैं, हाथ ऊपर की ओर करते हैं तो प्राणशक्ति, मन:शक्ति, जीवनशक्ति ऊर्ध्वगामी होती है। उसका अद्‌भुत विकास होता है और यही कारण है कि गौरांग के प्यारे, हरि के दुलारे भक्त हाथ ऊपर करते हैं, 'हरि बोल' कहते हैं तो जीवनशक्ति बढ़ती है, छलकती है और आनंद का अनुभव होता है। यह प्रत्यक्ष बात है।

जीवनशक्ति विकसित है तो योग में और योगेश्वर को पाने में सफलता मिलती है।

घृणा से, ग्लानि से, चिंता से, काम-विकार से और भय से जीवनशक्ति का नाश होता है। भयभीत व्यक्तियों के बीच बैठने से जीवनशक्ति का विनाश होता है। उच्च कक्षा के व्यक्तियों के बीच बैठने से जीवनशक्ति का विकास होता है ।

हिटलर का, सीज़र का चित्र देखने से जीवनशक्ति का विनाश होता है ऐसा मनोवैज्ञानिक रिसर्च करनेवालों का कहना है। अच्छे शांतिप्रद चित्र देखने से जीवनशक्ति का विकास होता है। जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान शिव, जगदंबा और सच्चे संत महात्माओं के चित्र देखने से जीवनशक्ति का विकास होता है क्योंकि उनका चित्र देखने से हृदय में प्रेम, भगवद् भावना और ईश्वर की याद आ जाती है। इससे जीवनशक्ति का विकास होता है जबकि अपना अहंकार पोषने के लिए हजारों निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करनेवाले हत्यारों के चित्रों को देखने से जीवनशक्ति का ह्रास होता है।

जीवनशक्ति का विकास करने की तरकीब आ जाय तो वह विकसित होती है। जब हम प्रेम से भरते हैं, धन्यवाद से भरते हैं, हाथ ऊपर की ओर करते हैं तो प्राणशक्ति, मन:शक्ति, जीवनशक्ति ऊर्ध्वगामी होती है । उसका अद्‌भुत विकास होता है।

रास्ते में आप चलते जा रहे हैं और मरा हुआ पशु देखा, किसीका वमन देखा अथवा मलमूत्रादि देखा तो उस समय आपके चित्त में ग्लानि आती है । इससे जीवनशक्ति के कुछ अंश क्षीण होते हैं । उस समय क्या करे ? महापुरुषों ने बताया कि सूर्यनारायण का स्मरण कर लो, उनकी ओर निहार लो, अग्नि का दर्शन कर लो, अथवा भगवान या किसी संत के चित्र को निहार लो, भगवन्नाम जप कर लो। क्षीण होनेवाली जीवनशक्ति इससे बच जायेगी। इन छोटी-छोटी बातों को अगर हम नहीं जानते हैं तो कितने ही जप करते हैं, कितनी ही खुराक खाते हैं फिर भी मन और इन्द्रियों को रोकने की या जीवनशक्ति का ठीक उपयोग करने की क्षमता हमारे पास नहीं रहती।

कामी व्यक्ति के आभामंडल में सात फुट की गोलाई में काम के परमाणु होते हैं। जैसे कामी के परमाणु होते हैं, ऐसे लोभी के, भयभीत के, अशांत व्यक्ति के भी होते हैं और उनके आवेग जीतने कमजोर और क्षणिक होते हैं उतने ही उनके परमाणु की योग्यता कम होती है। निष्काम, निर्भीक, शांत, उदार, दयालु, निरहंकार, क्षमाशील पुरुष के निर्भयता, दया, शांति, उदारता, प्रसन्नता आदि के दिव्य परमाणु होते हैं। जिनकी मन:शक्ति, जीवनशक्ति जितनी ठोस होती है उतनी उनकी व्यापकता अधिक होती है। यही कारण है कि काकभुशुंडजी जहाँ रहते थे वहाँ सवा कोष तक कलयुग को, अशांति को और जीवनशक्ति का ह्रास करनेवाले वातावरण को प्रवेश नहीं मिलता था । जैन धर्म के जानकार व्यक्तियों ने विकसित जीवनशक्तिवाले संतों को तीर्थंकर कहा है। तीर्थंकर माना तीर्थों को बनानेवाले। आज तक जो भी तीर्थ बने हैं वे या तो भगवान के प्यारे संतों के निवास के कारण बने

हैं अथवा तो भगवान के चरणारविंद के कारण बने हैं। वह भूमि तीर्थ में बदल गई है।

मैंने सुनाई थी एक कथा :

लखनभैया रामचन्द्रजी की सेवा ऐसी करते थे, इतनी करते थे कि इस जमाने का शायद ही कोई भाई अपने भाई की ऐसी सेवा कर सके। प्राय: असंभव है। लक्ष्मणजी रात्रि के समय कुटिया की परिक्रमा करके कुटिया को दंडवत् प्रणाम करते थे। क्यों ? क्योंकि सरकार उसमें आराम कर रहे हैं, रामचन्द्रजी उसमें सो रहे है। लखनभैया इतने आदर से सेवा करते थे।

घृणा से, ग्लानि से, चिंता से, काम-विकार से और भय से जीवनशक्ति का नाश होता है। भयभीत व्यक्तियों के बीच बैठने से जीवनशक्ति का विनाश होता है। उच्च कक्षा के व्यक्तियों के बीच बैठने से जीवनशक्ति का विकास होता है।

एक समय यात्रा करते-करते कोई ऐसी स्वार्थभूमि पर आये कि लखनभैया के चित्त में हुआ कि मैं सेवा करता हूँ तो मेरे परिश्रम का क्या होगा ? उन्होंने श्रीराम से कहा :

''वनवास तो प्रभु ! आपको मिला है और चाकरी मैं करता हूँ। मेरे लिए पुरस्कार की, तनख्वाह की कुछ व्यवस्था कीजिए।''

रामजी कहते हैं : ''चलो, करेंगे। अभी जरा सरोवर में स्नान करके आयें।''

सरोवर में स्नान करने के बाद रामचन्द्रजी पूछते हैं :

''क्या चाहिए भैया ?''

लखनभैया के पश्चात्ताप का कोई पार नहीं : ''यह मैंनें क्या कर डाला ! मैं तो सेवा के लिए आया था, अहोभाव से आया था और बड़ी विनति करने के बाद ही सेवा मुझे मिली थी। और मैं सेवा का बदला चाहता हूँ ? अरे ! मुझसे यह क्या हो गया ?''

लखनभैया प्रभु के चरण पकड़कर पश्चात्ताप करने लगे।

रामजी ने कहा : ''कोई बात नहीं, चलिए।''

जहाँ पुरस्कार माँगा था उसी जगह पर फिर खड़े कर दिये गये। फिर लखनभैया कहने लगे : ''हाँ, मुझे तनख्वाह चाहिए।''

रामजी बोलते हैं : ''यहाँ की मिट्टी ले लो, उसकी गठरी बाँध लो। आगे जाकर सब हो जायेगा।''

वहाँ की मिट्टी की गठरी उठाकर आगे गये और गठरी अलग रखकर फिर नहाए-धोए। अब भगवान पूछते हैं : ''मैं बदले में क्या दूँ ?''

लक्ष्मणजी बोले : ''प्रभु ! मुझे क्षमा करो। मैं मूढ़ता के सागर में गोते खा रहा हूँ। मेरे द्वारा जो बोला जा रहा है, मैं जैसा व्यवहार किए जा रहा हूँ, उसके लिये मैं लज्जित हूँ।''

रामचन्द्रजी कहते हैं : ''ठहरो लखनभैया ! गठरी खोलो।''

रामजी ने गठरी की मिट्टी बिछा दी। उस पर लक्ष्मणजी को खड़े कर दिये।

''बोलो, अब क्या विचार है?''

''विचार तो यही है कि मुझे मिलना चाहिए।''

रामजी में इतनी श्रद्धा और लक्ष्मणजी जैसे व्यक्ति ! फिर भी अगर वातावरण से उनकी भी जीवनशक्ति का ह्रास और विकास होता है तो आपके हमारे जीवन में परमाणुओं की, वायब्रेशनों की असर होती हो तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

रामचन्द्रजी ने कहा : ''लखनभैया ! तेरा कसूर नहीं। सुंद और उपसुंद नाम के दो दैत्य भाई थे। उनमें आपस में बड़ा प्यार था। उन्होंने तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान माँगा कि :

''वनवास तो प्रभु ! आपको मिला है और चाकरी मैं करता हूँ। मेरे लिए पुरस्कार की, तनख्वाह की कुछ व्यवस्था कीजिए।''

''हम किसीसे न मरें। न ऊपर न नीचे, न अगल न बगल, न अस्त्र से न शस्त्र से। न भगवान का कोई अवतार भी हमें मार सके।'' आखिर ब्रह्माजी ने कहा : ''कुछ तो छूट रखो !''

उन्होंने कहा : "अगर हम दोनों भाई एकदूसरे को मारें तभी मरें नहीं तो न मरें।" अपने आपसी प्यार पर उन्हें भरोसा था। अमर होने का वरदान वे चाहते थे।

उन क्रूरों के पास शक्ति आई तो दूसरों का शोषण और विनाश करने लगे। देवों और ब्रह्माजी ने आखिर तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को भेजकर दोनों भाईयों में ईर्ष्या का जहर पैदा कर दिया और दोनों भाई आपस में लड़ मरे। जहाँ दोनों भाई लड़ मरे थे, उस भूमि की क्रूर और स्वार्थी परमाणुओं वाली मिट्टी पर लखनभैया ! तू खड़ा है इसलिए तुझे ऐसे स्वार्थी विचार आ रहे हैं।"

"तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को भेजकर दोनों भाइयों में ईर्ष्या का जहर पैदा कर दिया और दोनों भाई आपस में लड़ मरे। जहाँ दोनों भाई लड़ मरे थे, उस भूमि की क्रूर और स्वार्थी परमाणुओं वाली मिट्टी पर लखनभैया ! तू खड़ा है इसलिए तुझे ऐसे स्वार्थी विचार आ रहे हैं।"

आद्य शंकराचार्यजी ने कहा है कि : "मुँह से भोजन करना ही भोजन नहीं है, आँखों से भी आदमी भोजन करता है, कान से भी भोजन करता है, नाक से भी भोजन करता है और त्वचा से भी भोजन करता है, आहार ग्रहण करता है।"

कुछ ऐसी हवाएँ आपको छू जाती हैं कि आपका मन प्रसन्न होता है और कुछ ऐसी हवाएँ आपको छूती हैं कि आप बेचैनी अनुभव करते हैं। आप कुछ ऐसा फर्नीचर और ऐसे व्यक्ति विशेष को देखते हैं कि वह व्यक्ति तो कहीं चला जाता है, फर्नीचर तो कहीं रह जाता है लेकिन आँखों के द्वारा आपने इतनी गंदगी अंदर डाल दी कि आपकी इच्छाएँ, वासनाएँ अंदर खदबदाने लगती हैं, आपका हृदय असुंदर हो जाता है।

कीर्तन करते करते जो दायें-बायें हिलते हैं उनको उतना लाभ नहीं होता। जो आगे पीछे हिलते हैं उनकी जीवनशक्ति का अधिक विकास होता है। जो नकारात्मक चेष्टाएँ, नकारात्मक हिलचाल करते हैं उनकी जीवनशक्ति अवरुद्ध हो जाती है। जो हकारात्मक चेष्टाएँ, हिलचाल करते हैं उनकी जीवनशक्ति का विकास होता है। भगवान को धन्यवाद देने से, अपने से श्रेष्ठों का चिन्तन करने से जीवनशक्ति का विकास होता है। प्रभु की जय बोलते हैं, कृष्ण कनैयालाल की जय बोलते हैं, तो इससे श्रीकृष्ण बड़े नहीं हो जाते। श्रीकृष्ण का बड़प्पन तो आखिरी बड़प्पन है, जहाँ से आगे कोई बड़प्पन हो ही नहीं सकता। लेकिन हम जब श्रीकृष्ण कनैयालाल की जय बोलते हैं तो हमारी जीवनशक्ति का विकास होता है। हम धन्यवाद देते हैं तो हमें लाभ होता है। भगवान की जय बोलने से भगवान बड़े नहीं हो जाते लेकिन हमारा चित्त शुद्ध होने लगता है।

प्रभु की जय बोलते हैं, कृष्ण कनैयालाल की जय बोलते हैं, तो इससे श्रीकृष्ण बड़े नहीं हो जाते। कृष्ण का बड़प्पन तो आखिरी बड़प्पन है, जहाँसे आगे कोई बड़प्पन हो ही नहीं सकता। लेकिन हम जब कृष्ण कनैयालाल की जय बोलते हैं तो हमारी जीवनशक्ति का विकास होता है।

मनु महाराज ने इक्ष्वाकु राजा से कहा : "नित्य अंतर्मुख रहो तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे। अंतर्मुख रहने से जीवनशक्ति बढ़ती है। इसीसे दुःख, रोग, अशांति दूर होती है।"

मूलाधार केन्द्र विकसित होने पर साधक की जठराग्नि तेज होती है, उसका मुखमंडल तेजस्वी हो जाता है। पटुता, सर्वज्ञता और सरलता उसका स्वभाव बन जाता है। वह भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान प्राप्त करता है। उसके मुख में सरस्वती का वास होता है। जो शास्त्र कभी सुने नहीं उसका रहस्यसहित व्याख्यान करने का सामर्थ्य आता है। उसे जप मात्र से मंत्रसिद्धि होती है और उसके संकल्प सिद्ध होते हैं। वह दादुरी सिद्धि प्राप्त करता है। जानकार गुरु से दीक्षा लेकर छः महीने तक प्रतिदिन साधना करने से इस प्रकार की योग्यता आ जाती है।

जिस प्रयत्नशील योग साधक के

स्वाधिष्ठान केन्द्र का विकास होकर उसमें ध्यान जमता है, वह भी अनसुने शास्त्रों के रहस्यों का बयान कर सकता है। वह मृत्यु को जीत लेता है, अणिमादि सिद्धि प्राप्त करता है। अनाहत केन्द्र का ध्यान जमने पर साधक पर कामातुर सुंदर स्त्री, अप्सरा आदि मोहित होते हैं। वह त्रिकालदर्शी बनता है। दूरश्रवण और दूरदर्शन की शक्ति प्राप्त होती है। देवता और योगियों के दर्शन वह कर सकता है। वह सदा प्रसन्नात्मा, जितात्मा रहता है। जैसे आयने पर मोती नहीं ठहरता ऐसे ही उसके चित्त पर संसार के आघात, प्रत्याघात, विकार आदि नहीं ठहरते। जलकमलवत् जीने की कला उसमें अपने आप विकसित हो जाती है। उसके सारे मनोरथ पूरे हो जाते हैं और अनाहत नाद के अर्थ में नित्य उसका मन रमण करता है। उस पुण्यात्मा योगी के निकट बैठनेवाले को भी प्रसन्नता, शांति प्राप्त होने लगती है।

गुरु नानक ने ठीक कहा है :

अनहद सुनो वड़भागियां,
जो सकल मनोरथ पूरे।

वह अनहद नाद का अभ्यासी योगी धन्य हो जाता है और संपर्क में आनेवाले को भी धन्य बना देता है। प्रयत्नपूर्वक अनाहत केन्द्र का ध्यान करनेवाला साधक भी व्रत-नियम के आलम्बन से छः महीने में अनाहत नाद की ऊँचाई का अनुभव कर सकता है। जो लोग उससे घृणा करते थे, हँसी उड़ाते थे, डाँटते-फटकारते थे वे ही लोग अब उसका आदर करते हैं। इस अनाहत केन्द्र की महिमा का पूर्ण वर्णन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा आदि देव भी इसको गोप्य रखते हैं। अनधिकारी इसका लाभ नहीं उठा सकता। अधिकारी साधक को ही गुरुदीक्षा के वक्त शांभवी दीक्षा से गुरुकृपा की किरण मिलती है और वह यत्न करके, संयम, नियम और प्रतिदिन एकांत में अभ्यास करके अवश्य महानता को पाता है इसमें जरा भी संदेह नहीं। साधारण व्यक्ति, इसका महत्त्व न समझनेवाला साधक प्रतिदिन थोड़ा ध्यान भजन करता है और अपनी धारणाशक्ति आहार-विहार की अशुद्धि में बिखेर देता है। नहीं तो छः महीने में कहीं का कहीं पहुँच सकता है। हमको चालीस दिन में अलग-अलग बहुत अनुभव हुए हैं। कोई भी श्रद्धावान साधक विधिवत् अभ्यास करे तो वह भी अनुभव कर सकता है। आश्चर्यजनक, कल्पनातीत, अलौकिक दिव्य अनुभव होते हैं यह बिल्कुल पक्की बात है, सच्ची बात है।

आप अपनी जीवनशक्ति को कब तक सुषुप्त रखोगे ? उसे जगाओ। कुछ तो करो ! कुछ तो पाओ ! बीज को वृक्ष बनाओ। जीवनशक्ति जगाओ। जीवनदाता के रस का अनुभव करो।

*

(पेज नं. ९ से जारी...) मेहसाना : विजापुर, देलवाड़ा, देवड़ा, ऊँझा, पाटण, विसनगर, कड़ी, कलोल, माणसा, मोढेरा, बेचराजी, तारंगा, खेड़ब्रह्मा, पालनपुर, डीसा, राधनपुर। **कच्छ :** गांधीधाम, भुज अंजार, मांडवी, कंडला। **खेड़ा :** नडीयाद, वणाकबोरी, महेमदाबाद, कणजरी, बोरसद, डाकोर, खंभात, पेटलाद, कपडवंज, वडताल, बारेजा। **बड़ौदा :** भादरा, जंबुसर, आमोद, देवली। **पंचमहाल :** गोधरा, दाहोद, झालोद, देवगढ़-बारीया। **डांग :** आहवा। **वलसाड़ :** वापी, सेलवास, दमण, कोलक, उमरगाँव, दादरानगर हवेली। **साबरकांठा :** हिम्मतनगर, मोड़ासा, बायड़, मालपुर, मेघरज, तलोद, इडर, हरसोल, शामळाजी। **सौराष्ट्र :** सुरेन्द्रनगर, लखतर, लींबडी, राणपुर, ध्रांगध्रा, हळवद, चोटीला, धोळ, थान, मोरबी, मालीया, वांकानेर, जसदण, गोंडल, ढसा, जेतपुर, गारीयाधार, पोरबन्दर, जुनागढ़, अमरेली, द्वारका, मीठापुर, वेरावळ, राजुला, महुवा, पालीताणा, जामनगर, केशोद। **(२) उत्तर प्रदेश :** कानपुर गाजीयाबाद, आग्रा, अल्हाबाद (प्रयाग) बनारस, गोरखपुर, झाँसी, मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार, ऋषिकेष, लखनौ, नैनीताल, बरेली, जलान, रायबरेली। **(३) मध्य प्रदेश :** उज्जैन, नागदा, तराना, उतरेल, खाचरोद, भोपाल, जबलपुर, इन्दौर, अलीराजपुर, झाबुआ, मन्दसौर, नीमच, रायगढ़, धार, मनावर, अमझेरा, पीथमपुर, अंजड़, बड़वानी, समावद, सैंधवाह, खण्डवा, बुरहानपुर, गुना, ग्वालियर, लश्कर, रायपुर, राजगढ़, शिवपुरी, विदिशा, सारंगपुर, महु, सानवेर, शिहोर, बैरागढ़, बाड़वाह, रतलाम, जावरा। **(४) राजस्थान :** जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, मांडल, भीलवाड़ा, सुमेरपुर, पाली, अजमेर, बिकानेर, ब्यावर, अलवर, चित्तोड़गढ़, प्रतापगढ़, सागवाड़ा, डुंगरपुर। **(५) हैद्राबाद, सिकंदराबाद, मद्रास, बेंगलोर, गौहाटी, कलकत्ता, पुना, बम्बई।**

(१)

माता सीता का दैवी पराक्रम

नारी! तू नारायणी

आनन्द रामायण में एक कथा आती है :

एक बार भगवान श्रीराम जब सपरिकर सभा में विराज रहे थे, विभीषण बड़ी विकलतापूर्वक अपनी स्त्री तथा चार मन्त्रियों के साथ दौड़े आये और बार-बार उसाँस लेते हुए कहने लगे :

"राजीवनयन राम ! मुझे बचाइये, बचाइये। कुम्भकर्ण के पुत्र मूलकासुर नामक राक्षस ने, जिसे मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण कुम्भकर्ण ने वन में छुड़वा दिया था, पर मधुमक्खियों के शहद के छत्ते से जो पनप गया था, तरूण होकर तपस्या के द्वारा ब्रह्माजी को प्रसन्न करके बल से गर्वित होकर बड़ा भारी ऊधम मचा रखा है। उसे आपके द्वारा लङ्का-विजय तथा मुझे राज्य-प्रदान की बात मालूम हुई तो पातालवासियों के साथ दौड़ा हुआ लङ्का पहुँचा और मुझ पर धावा बोल दिया। जैसे-तैसे मैं उसके साथ छः महीने तक युद्ध करता रहा। गत रात्रि में मैं अपने पुत्र, मन्त्रियों तथा स्त्री के साथ किसी प्रकार सुरंग से भागकर यहाँ पहुँचा हूँ। उसने कहा है कि, 'पहले भेदिया विभीषण को मारकर फिर पितृहन्ता राम को भी मार डालूँगा।' सो राघव ! वह आपके पास भी आता ही होगा, इसलिए ऐसी स्थिति में आप जो उचित समझते हों, वह तुरन्त कीजिए।"

भक्तवत्सल भगवान श्रीराम के पास उस समय यद्यपि बहुत से अन्य आवश्यक कार्य भी थे, तथापि भक्त की करुण कथा सुनकर उन्होंने अपने पुत्र लव, कुश तथा लक्ष्मण आदि भाइयों एवं सारी वानरी सेना को तुरन्त तैयार किया और पुष्पकयान पर चढ़कर झट लङ्का की ओर चल पड़े।

मूलकासुर को राघवेन्द्र के आने की बात मालूम हुई तो वह भी अपनी सेना लेकर लड़ने के लिए लङ्का के बाहर आया। बड़ा भारी तुमुल युद्ध छिड़ गया। सात दिनों तक घोर युद्ध होता रहा। बड़ी कठिन समस्या उत्पन्न हो गई। अयोध्या से सुमन्त्र आदि सभी मन्त्री भी आ पहुँचे। हनुमानजी बराबर संजीविनी लाकर वानरों, भालुओं तथा मानुषी सेना को जिलाते ही रहे। पर युद्ध का परिणाम उलटा ही दिखता रहा। भगवान कल्पवृक्ष के नीचे युद्ध विषयक चिन्तन करते हुए बैठे थे। मूलकासुर अभिचार होम के लिए गुप्त-गुहा में गया था। विभीषण भगवान से उसकी गुप्त चेष्टा बतला रहे थे। तब तक ब्रह्माजी वहाँ आये और कहने लगे :

"रघुनन्दन ! इसे मैंने स्त्री के हाथ मरने का वरदान दिया है। इसके साथ ही एक बात और है, उसे भी सुन लीजिए। एक दिन इसने मुनियों के बीच शोक से व्याकुल होकर 'चण्डी सीता के कारण मेरा कुल नष्ट हुआ' ऐसा वाक्य कहा। इस पर एक मुनि ने क्रोधित होकर उसे शाप दे दियाज 'दुष्ट ! तूने जिसे चण्डी कहा है, वही सीता तुझे जान से मार डालेगी।' मुनि का इतना कहना था कि वह दुष्टात्मा उन्हें खा गया। अब क्या था, शेष सब मुनि लोग चुपचाप उसके डरके मारे धीरे से वहाँ से खिसक गये। इसलिए अब उसकी कोई औषंध नहीं है। अब तो केवल सीता ही इसके वध में समर्थ हो सकती हैं। ऐसी दशा में रघुनन्दन ! आप उन्हें ही यहाँ बुलाकर इसका तुरन्त वध कराने की चेष्टा करें। यही इसके वध का एक मात्र उपाय है।"

इतना कहकर ब्रह्माजी चले गये। भगवान श्रीराम ने भी तुरन्त सीता को पुष्पक-यान से सुरक्षित ले आने के लिए हनुमानजी और विनतानन्दन गरुड़ को भेजा। इधर पराम्बा भगवती जनकनन्दिनी सीता की बड़ी विचित्र दशा थी। उन्हें श्रीराघवेन्द्र रामचन्द्र के विरह में एक क्षण भर भी चैन नहीं थी। वे बार-बार प्रासाद-शिखर पर चढ़कर देखतीं कि कहीं दक्षिण से पुष्पक पर प्रभु तो नहीं पधार रहे हैं। वहाँ से निराश होकर वे पुनः द्राक्षा-मण्डप के नीचे

> **'पहले भेदिया विभीषण को मारकर फिर पितृहन्ता राम को भी मार डालूँगा।'**

भगवान कल्पवृक्ष के नीचे युद्ध विषयक चिन्तन करते हुए बैठे थे। मूलकासुर अभिचार होम के लिए गुप्त-गुहा में गया था। विभीषण भगवान से उसकी गुप्त चेष्टा बतला रहे थे।

शीतलता की आशा में चली जातीं। कभी वे प्रभु की विजय के लिए तुलसी, शिवप्रतिमा, पीपल आदि की प्रदक्षिणा करतीं और कभी ब्राह्मणों से मन्युसूक्त का पाठ करातीं। कभी वे दुर्गा की पूजा करके यह माँगतीं कि विजयी श्रीराम शीघ्र लौटें और कभी ब्राह्मणों से शतरुद्रिय का जप करातीं। नींद तो उन्हें कभी आती ही न थीं। वे बहुत सारे देवी-देवताओं की मनौती मनातीं तथा सारे भोगों और श्रृङ्गारों से विरत रहतीं। इसी प्रकार युग के समान उनके दिन जा रहे थे कि गरुड़ और हनुमानजी उनके पास पहुँचे।

पति के सन्देश को सुनकर सीताजी तुरन्त चल दीं और लङ्का में पहुँचकर उन्होंने कल्पवृक्ष के नीचे प्रभु का दर्शन किया। प्रभु ने उनके दौर्बल्य का कारण पूछा। पराम्बा ने लजाते हुए हँसकर कहा :

''स्वामिन्! यह केवल आपके अभाव में हुआ है। आपके बिना न नींद आती है न भूख लगती है। मैं आपकी वियोगिनी, बस, योगिनी की तरह रात-दिन आपके ध्यान में पड़ी रही। बाह्य शरीर में क्या हुआ है, इसका मुझे कोई ज्ञान नहीं।''

''स्वामिन्! यह केवल आपके अभाव में हुआ है। आपके बिना न नींद आती है न भूख लगती है। मैं आपकी वियोगिनी, बस, योगिनी की तरह रात-दिन आपके ध्यान में पड़ी रही। बाह्य शरीर में क्या हुआ है, इसका मुझे कोई ज्ञान नहीं।''

तत्पश्चात् प्रभु ने मूलकासुर के पराक्रमादि की बात कही। फिर तो क्या था, भगवती को क्रोध आ गया। उनके शरीर से एक दूसरी तामसी शक्ति निकल पड़ी। उसका स्वर बड़ा भयानक था। वह लङ्का की ओर चली।

तब तक वानरों ने भगवान के संकेत से गुहा में पहुँचकर मूलकासुर को अभिचार से उपरत किया। वह दौड़ता हुआ इनके पीछे चला तो उसका मुकुट गिर पड़ा। तथापि वह रणक्षेत्र में आ गया।

छायासीता को देखकर उसने कहा : ''तू भाग जा। मैं स्त्रियों पर पुरुषार्थ नहीं दिखाता।'' पर छाया ने कहा : **''मैं तुम्हारी मृत्यु चण्डी हूँ। तूने मेरे पक्षपाती ब्राह्मण को मार डाला था, अब मैं तुझे मारकर उसका ऋण चुकाऊँगी।''** इतना कहकर उसने मूलक पर पाँच बाण चलाये। मूलक ने भी बाण चलाना शुरु किया। अन्त में चण्डिकास्त्र चलाकर छाया ने मूलकासुर का सिर उडा दिया। वह लङ्का के दरवाजे पर जा गिरा। राक्षस हाहाकार करते हुए भाग खड़े हुए। छाया लौटकर सीता के बदन में प्रवेश कर गई। तत्पश्चात् विभीषण ने प्रभु को पूरी लङ्का दिखायी, क्योंकि पितृवचन के कारण पहली बार वे लङ्का में न जा सके थे। सीताजी ने उन्हें अपना वासस्थल अशोकवन दिखाया। कुछ देर तक वे प्रभु का हाथ पकड़कर उस वाटिका में घूमीं भी। फिर कुछ दिनों तक लङ्का में रहकर वे सीता तथा लव-कुशादि के साथ पुष्पकयान से अयोध्या लौट आये।

*

(२)

अपना दीया आप बनो

स्वामी युक्तेश्वरगिरि के एक उच्च कोटि के शिष्य थे। उनका नाम था स्वामी योगानन्द परमहंस। वे हिन्दू संस्कृति और धर्म का प्रचार आगे बढ़ा रहे थे। उन्होंने अमेरिका में कई योगकेन्द्र स्थापित किये हैं।

स्वामी योगानन्द की एक अमेरिकन शिष्या थी। उसका नाम था ईस्थर। उसका मन ध्यान में स्थिर नहीं हो पाता था। वह बार-बार योगानन्दजी से विनती करती थी :

''गुरुदेव! मुझे आशीर्वाद दें जिससे भटकता हुआ मेरा मन स्थिर हो जाय... कैसे भी करके मेरा मन

ध्यान में लग जाय।''

योगानन्दजी उसे आशीर्वाद तो देते थे और ईस्थर भी घर जाकर साधना में लग जाती थी लेकिन उसका मन स्थिर न होने के कारण धीरे-धीरे उसका उत्साह मन्द हो जाता था। वह पुनः भागती हुई स्वामीजी के पास आ जाती थी, प्रार्थना करती थी :

''स्वामीजी ! मुझे आशीर्वाद दें... मेरा मन स्थिर हो जाय और मैं साधना में आगे बढ़ूँ।''

योगानन्दजी पुनः उसे आशीर्वाद देते और साधना जारी रखने के लिए कहते थे। इस प्रकार काफी समय तक चलता रहा। ईस्थर कुछ समय तक साधना में स्थिर होने का प्रयास करती रही। दिन बीतने पर उसका मन अधिकाधिक भटकने लगता और वह निराश हो जाती थी। फिर से स्वामीजी के पास पहुँच जाती, आशीर्वाद ले आती लेकिन मन में कुछ परिवर्तन महसूस नहीं होता था। महीनों तक ऐसा चलता रहा। वह जब जब स्वामीजी के पास आती तब बिल्कुल गुस्सा किये बिना ही स्वामीजी उसके खुशहाल पूछते थे और आशीर्वाद देते थे।

ऐसे ही फिर एक बार ईस्थर धैर्य के साथ गुरुजी के पास आयी। उसे देखते ही स्वामीजी ने कहा :

''ईस्थर ! तू धन्य है। आज तुझे ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त हो गये।''

ईस्थर खुश हो उठी। अत्यंत हर्षित होकर बोली :

''सचमुच मुझे ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त हो गये हैं ?''

''हाँ ईस्थर ! आज तुझे मेरे आशीर्वाद के साथ ईश्वर के आशीर्वाद भी प्राप्त हो गये हैं लेकिन अभी एक और आशीर्वाद प्राप्त करना बाकी है।''

ईस्थर ने आश्चर्य से पूछा : ''किसके आशीर्वाद प्राप्त करना बाकी है स्वामीजी ?''

योगानंदजी ने हँसते हुए कहा : 'तेरे खुद के आशीर्वाद।''

''यह कैसे ?''

''सुन ! तू हर बार मेरे आशीर्वाद ही माँगती है। ठीक है न? मैं हर बार ईश्वर को ध्यान में रखते हुए तुझे आशीर्वाद देता हूँ, इनमें ईश्वर के आशीर्वाद भी समाविष्ट होते हैं। फिर भी तुझे महसूस होता है कि साधना में तेरी कोई प्रगति नहीं हो रही है। इसका कारण तुझे पता है ? आज से तू स्वयं अपने आपको आशीर्वाद दे, संकल्प कर और पूरी लगन से साधना में लग जा। फिर मुझे बताना कि तूने साधना में क्या प्रगति की है।''

मैं ईश्वर को ध्यान में रखते हुए तुझे आशीर्वाद देता हूँ, इनमें ईश्वर के आशीर्वाद भी समाविष्ट होते हैं। फिर भी तुझे महसूस होता है कि साधना में तेरी कोई प्रगति नहीं हो रही है। इसका कारण तुझे पता है ? आज से तू स्वयं अपने आपको आशीर्वाद दे, संकल्प कर और पूरी लगन से साधना में लग जा।

ईस्थर घर लौटी। सोचने लगी कि वह साधना में क्यों आगे नहीं बढ़ सकती है। धीरे धीरे उसे कारणों का पता चलने लगा और उन कारणों को हटाने में प्रयत्नशील हो गई। कुछ ही समय में वह साधना में आगे बढ़ गई। खुश होकर योगानन्दजी के पास आयी और सब बातें बताई। स्वामीजी ने कहा :

''साधना के लिए आत्म- निरीक्षण, परम श्रद्धा, निष्ठा और तत्परता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भगवान बुद्ध ने भी आत्म-निरीक्षण के विषय में कहा है : 'अप्प दीपो भव।' अपना दीया आप बनो।''

शिष्य पर गुरु के आशीर्वाद तो बरसते ही रहते हैं पर शिष्य के पास अगर योग्यता नहीं होती है तो उन आशीर्वाद का प्रभाव नहीं दिखाई देता।

आखिर ईस्थर ने आत्म-शान्ति पाई और उत्तम साधिकाओं में उसकी ख्याति हुई।

*

संतों के आदेश के मुताबिक आसन करो, प्राणायाम करो, ध्यान करो, आत्मचिन्तन करो और ऐसे पद में आरूढ़ हो जाओ कि जहाँ मौत भी न पहुँच सके।

विद्यार्थियों को पू. बापू का उद्बोधन

गुरु वशिष्ठजी महाराज भगवान श्रीरामचन्द्रजी से कहते हैं :

येन केन प्रकारेण यस्य कस्यापि देहीनः ।
संतोषं जनयेद्राम तदेवेश्वरपूजनम् ॥

'किसी भी प्रकार से किसी भी देहधारी को सन्तोष देना यही सच्चा ईश्वर-पूजन है।'

(योगवाशिष्ठ)

कैसे भी करके किसी भी देहधारी को सुख देना, सन्तोष देना यह ईश्वर का पूजन है, क्योंकि प्रत्येक देहधारी में परमात्मा का निवास है।

चल स्वरूप जोबन सुचल चल वैभव चल देह ।
चलाचली के वक्त में भलाभली कर लेय ॥

हमारा शरीर चल है। इसका कोई भरोसा नहीं। किसकी किस प्रकार, किस निमित्त से मृत्यु होनेवाली है, कोई पता नहीं।

मोरबी (सौराष्ट्र) में मच्छू बाँध टूटा और हजारों लोग बेचारे यकायक चल बसे। भोपाल गैस दुर्घटना में एक साथ बीस-बीस हजार लोग काल के ग्रास बन गये। कहीं पाँच जाते हैं कहीं पच्चीस जाते हैं। बद्रीनाथ के मार्ग पर बस उल्टी होकर गिर पड़ी, कई लोग मौत का शिकार बन गये। इस देह का कोई भरोसा नहीं।

'चल स्वरूप जोबन सुचल चल वैभव चल देह ।'

वैभव चल है। करोड़पति, अरबपति आदमी कब 'फूटपाथपति' हो जाय कोई पता नहीं। यौवन कब वृद्धावस्था में परिवर्तित हो जायेगा, कब बीमारी पकड़ लेगी कोई पता नहीं। आज धनवान दिखनेवाला आदमी दो साल के बाद कैसा रहेगा, कोई पता नहीं। आज जवान और हट्टाकट्टा मजबूत दिखनेवाला आदमी दो दिन के बाद कौन-सी परिस्थिति में जा गिरेगा, कोई पता नहीं। अतः हमें अपने शरीर का सदुपयोग कर लेना चाहिए।

शरीर का सदुपयोग यही है कि किसी देहधारी के काम आ जाना। मन का सदुपयोग है किसीको आश्वासन देना, शान्त्वना देना। अपने पास साधन हों तो चीज-वस्तुओं के द्वारा जरूरतमन्द लोगों की यथायोग्य सेवा करना। ईश्वर की दी हुई वस्तु ईश्वर-प्रीत्यर्थे किसीके काम में लगा देना। सेवा को सुवर्णमय मौका समझकर सत्कर्म कर लेना।

वशिष्ठजी महाराज कहते हैं : "हे रामजी ! **येन केन प्रकारेण...।**" किसी भी देहधारी को कैसे भी करके सुख देना चाहिए, चाहे वह पाला हुआ कुत्ता हो या अपना तोता हो, पड़ौसी हो या अपना भाई या बहन हो, मित्र हो या कोई अजनबी इन्सान हो। अपनी वाणी ऐसी मधुर, स्निग्ध और सारगर्भित हो कि जिससे हम सभी की सेवा कर सकें।

शरीर से भी किसीकी सेवा करना चाहिए। रास्ते में चलते वक्त किसी पंगु मनुष्य को सहायरूप बन सकते हों तो बनना चाहिए। किसी अनजान आदमी को मार्गदर्शन की आवश्यकता हो तो सेवा का मौका उठा लेना चाहिए। कोई वृद्ध हो, अनाथ हो तो यथायोग्य सेवा कर लेने का अवसर नहीं चूकना चाहिए। सेवा लेनेवाले की अपेक्षा सेवा करनेवाले को अधिक आनन्द मिलता है।

भूखे को रोटी देना, प्यासे को जल पिलाना, हारे हुए, थके हुए को स्नेह के साथ सहाय करना, भूले हुए को मार्ग दिखाना, अशिक्षित को शिक्षा देना और अभक्त को भक्त बनाना चाहिए। बीड़ी, सिगरेट, शराब और जुआ जैसे व्यसनों में फँसे हुए लोगों को स्नेह से समझाना चाहिए। सप्ताह

बच्चों के भीतर दया छुपी हुई है, प्रेम छुपा हुआ है, स्नेह छुपा हुआ है, सामर्थ्य छुपा हुआ है। अरे ! बच्चों के भीतर भगवान योगेश्वर, परब्रह्म परमात्मा छुपे हुए हैं।

में, पन्द्रह दिन में एक बार निकल पड़ना चाहिए अपने पड़ौस में, मुहल्लों में। अपने से हो सके ऐसी सेवा खोज लेना चाहिए। आपका अन्तःकरण पवित्र होगा। आपकी छुपी हुई शक्तियाँ जागृत होगी।

आपके चित्त में परमात्मा की असीम शक्तियाँ हैं। इन असीम शक्तियों का सदुपयोग करना आ जाय तो बेड़ा पार हो जाय।

यह बाल्यावस्था आपकी बहुत उपयोगी अवस्था है, बहुत मधुर अवस्था है। आपको, आपके माता-पिता को, आचार्यों को इसका सदुपयोग करने की कला जितनी अधिक आयेगी उतने अधिक आप महान बन सकेंगे।

कलकत्ता में १८८९ में प्लेग की महामारी फैल गयी। स्वामी विवेकानन्द सेवा में लग गये। अन्य विद्यार्थियों एवं संन्यासियों से कहा :

"हम लोग दीन-दुःखी, गरीब लोगों की सेवा में लग जायें।"

उन लोगों ने कहा : " सेवा में तो लग जायें लेकिन दवाइयाँ कहाँ से देंगे? उनको पौष्टिक भोजन कहाँ से देंगे?"

विवेकानन्द ने कहा : "सेवा करते करते अपना मठ भी बेचना पड़े तो क्या हर्ज़ है? अपना आश्रम बेचकर भी हमें सेवा करना चाहिए।"

विवेकानन्द सेवा में लग गये। आश्रम तो क्या बेचना था! भगवान तो सब देखते ही हैं कि ये लोग सेवा कर रहे हैं। लोगों के हृदय में प्रेरणा हुई। उन्होंने सेवाकार्य उठा लिया।

स्वामी विवेकानन्द का निश्चय था कि सेवाकार्य के लिए अपना मठ भी बेचना पड़े तो साधु-संन्यासियों को तैयारी रखना चाहिए। जनता-जनार्दन की सेवा में जो आनन्द व जीवन का कल्याण है वह भोग भोगने में नहीं है। विलासी जीवन में, ऐश-आराम के जीवन में वह सुख नहीं है।

महाराज विक्रमादित्य जब सोते तब किशोर पहरा देता, चौकी करता। एक बार मध्यरात्रि के समय कोई दीन-दुःखी महिला आक्रन्द कर रही हो ऐसी आवाज आयी। बुद्धिमान विक्रमादित्य चौंक कर जाग उठे।

बिहार में १९६७ में अकाल पड़ा। रविशंकर महाराज गुजरात में अहमदाबाद की किसी स्कूल में गये और बच्चों से कहा :

"बच्चों! आप लोग युनिफार्म पहनकर स्कूल में पढ़ने के लिए आते हैं। आपको सुबह में नास्ता मिलता है, दोपहर को भोजन मिलता है, शाम को भी भोजन मिलता है। बिहार में ऐसे बच्चे हैं कि जिनको बेचारों को नास्ता तो क्या, एक बार भरपेट भोजन भी नसीब नहीं होता। ऐसे भी गरीब बच्चे हैं जिनको बेचारों को पहनने के लिए कपड़े नहीं मिलते। ऐसे भी बच्चे हैं जिनको पढ़ने का मौका नहीं मिलता।

मेरे प्यारे बच्चों! आपके पास तो दो-पाँच ड्रेस होंगे किन्तु बिहार में आज ऐसे भी छात्र हैं जिनके पास दो जोड़ी कपड़े भी नहीं हैं। बिहार में अकाल पड़ा है। लोग तड़प-तड़पकर मर रहे हैं।"

सबके देखते ही देखते एक निर्दोष बालक उठ खड़ा हुआ। हिम्मत से बोला :

"महाराज! आप यदि वहाँ जानेवाले हों तो मैं अपने ये कपड़े उतार देता हूँ। मैं एक सप्ताह तक शाम का भोजन छोड़ दूँगा और मेरे हिस्से का वह अनाज घर से माँगकर ला देता हूँ। आप मेरी इतनी सेवा स्वीकार करें।"

बच्चों के भीतर दया छुपी हुई है, प्रेम छुपा हुआ है, स्नेह छुपा हुआ है, सामर्थ्य छुपा हुआ है। अरे! बच्चों के भीतर भगवान योगेश्वर, परब्रह्म परमात्मा छुपे हुए हैं।

देखते ही देखते एक के बाद दूसरा, तीसरा, चौथा... करते-करते सब बच्चे गये अपने घर और अनाज लाकर स्कूल में ढेर कर दिया।

रविशंकर महाराज ने थोड़ी-सी शुरुआत की। वे जेतलपुर की स्कूल में गये और वहाँ प्रवचन किया। वहाँ एक विद्यार्थी खड़ा होकर बोला :

"महाराज ! कृपा करके आप हमारी स्कूल में एक घण्टा ज्यादा ठहरें।"

"क्यों भाई?"

"मैं अभी वापस आता हूँ।" कहकर वह घर गया। दूसरे भी सब बच्चे घर गये और वापस आकर स्कूल में अनाज व कपड़ों का ढेर कर दिया ।

"बेटे ! उपाय तो है। राजा विक्रमादित्य के बदले में कोई किशोर वय का बालक अपना सिर दे तो उसकी आयु राजा को मिले और राजा की आयु दीर्घ बन जाय।"

बाद में तो सेठ लोग भी सेवा में लग गये। लाखों रूपयों का दान मिला और बिहार में सेवाकार्य शुरू हो गया।

रविशंकर महाराज कहते हैं :

"मुझे इस सेवाकार्य की प्रेरणा अगर किसीने दी हो तो इन नन्हें-मुन्ने बच्चों ने दी। मुझे आज पता चला कि छोटे-छोटे विद्यार्थियों में भी कुछ सेवा कर लेने की तत्परता होती है, कुछ देने की तत्परता होती है। हाँ, उनकी इस तत्परता को विकसित करने की कला, सदुपयोग करने की भावना होनी चाहिए।"

विद्यार्थियों में देने की तैयारी होती है। और तो क्या, अपना अहं भी देना हो तो उनके लिए सरल है । अपना अहं देना बड़ों को कठिन लगता है। बच्चे को अगर कहें कि 'बैठ जा' तो बैठ जायेगा और कहें 'खड़ा हो जा' तो खड़ा हो जायेगा । उठ-बैठ करायेंगे तो भी करेगा । क्योंकि अभी वह निखालस है।

यह बाल्यावस्था आपकी बहुत उपयोगी अवस्था है, बहुत मधुर अवस्था है। आपको, आपके माता-पिता को, आचार्यों को इसका सदुपयोग करने की कला जितनी अधिक आयेगी उतने अधिक आप महान बन सकेंगे ।

राजा विक्रमादित्य अपने अंगरक्षकों के स्थान पर, अपने निजी सेवकों के स्थान पर किशोर वय के बच्चों को नियुक्त करते थे। राजा जब निद्रा लेते तब छोटी-सी तलवार लेकर चौकी करनेवाले किशोर उम्र के बच्चे ही रहते थे।

"कोई महिला थी, महाराज ! उसकी सास ने उसे डाँटकर घर से निकाल दिया था। मैं उसको सास के घर ले गया और समझाया कि इस प्रकार अपनी बहू को परेशान करोगे तो में महाराज साहब को शिकायत कर दूँगा। सास-बहू दोनों के बीच समझौता कराके आया। इसमें देर हो गई।"

किसीको कहीं सन्देश भेजना हो, कोई समाचार कहलवाना हो तो किशोर दौड़ते हुए जायेगा। बड़ा आदमी किशोर की तरह नहीं जाता।

आपकी किशोरावस्था बहुत ही उपयोगी अवस्था है, साहसिक अवस्था है, दिव्य कार्य कर सको ऐसी योग्यता प्रकट करने की अवस्था है।

भगवान रामचन्द्रजी जब सोलह साल के थे उन दिनों में गुरु वशिष्ठजी ने उपदेश दिया है कि : **'येन केन प्रकारेण...'**

आपसे हो सके उतने प्रेम से बात करो। आप माँ की थकान उतार सकते हैं । पिता से कुछ सलाह पूछो, उनकी सेवा करो। पिता के हृदय में अपना स्थान ऊँचा बना सकते हैं। पड़ोसी की सहाय करने पहुँच जाओ। आपके पड़ोसी फिर आपको देखकर गद् गद् हो जायेंगे । स्कूल में तन्मय होकर पढ़ो, समझो, सोचो, तो शिक्षक का हृदय प्रसन्न होगा।

प्रातःकाल में उठकर पहले ध्यानमग्न बनो। दस मिनट मौन रहो। संकल्प करो कि आज के दिन खूब तत्परता से कार्य करना है, उत्साह से करना है। **'येन केन प्रकारेण...।'** किसी भी प्रकार से किसी के भी काम में आना है, उपयोगी होना है। ऐसा संकल्प करेंगे तो आपकी योग्यता बढ़ेगी। आपके भीतर ईश्वर की असीम शक्तियाँ हैं । जितने अंश में आप निखालस होकर सेवा में लग जायेंगे उतनी वे शक्तियाँ जागृत होगी।

विक्रमादित्य की निजी सेवा करनेवाले कुछ किशोर थे। उसमें एक लड़का था जिसका नाम भी किशोर था। महाराज विक्रमादित्य जब सोते तब किशोर पहरा देता, चौकी करता । एक बार मध्य रात्रि के समय कोई दीन-दुःखी महिला

आक्रन्द कर रही हो ऐसी आवाज आयी। बुद्धिमान विक्रमादित्य चौंककर जाग उठे।

"अरे! कोई रुदन कर रहा है! जा किशोर! तलास कर। पासवाले मंदिर की ओर से यह आवाज आ रही है। क्या बात है, जाँच करके आ।"

वह हिम्मतवान किशोर गया। देखा तो मंदिर में एक स्त्री रो रही है। किशोर ने पूछा :

"तू कौन है?"

वह कुलीन स्त्री बोली : "मैं नगरलक्ष्मी हूँ, नगरश्री हूँ। इस नगर का राजा विक्रमादित्य बहुत दयालु इन्सान है। दीन-दु:खी लोगों के दु:ख हरनेवाला है। किशोर बच्चों को स्नेह करनेवाला है। प्राणिमात्र की सेवा में तत्पर रहनेवाला है। ऐसे दयालु, पराक्रमी, उदार और प्रजा का स्नेह से लालन-पालन करनेवाले राजा के प्राण कल सुबह में सूर्योदय के समय चले जायेंगे। मैं राज्यलक्ष्मी किसी पापी के हाथ लगूंगी। मेरी क्या दशा होगी! अत: मैं रो रही हूँ।"

विक्रमादित्य का निजी सेवक, अंगरक्षक किशोर कहता है : "हे राज्यलक्ष्मी! मेरे राजा साहब कल स्वर्गवासी होंगे?"

"हाँ।"

"नहीं... मेरे राजा साहब को मैं जाने नहीं दूँगा।"

"संभव नहीं है बेटा! यह तो काल है। कुछ भी निमित्त से वह सबको ले जाता है।"

"इसका कोई उपाय?"

"बेटे! उपाय तो है। राजा विक्रमादित्य के बदले में कोई किशोर वय का बालक अपना सिर दे तो उसकी आयु राजा को मिले और राजा की आयु दीर्घ बन जाय।"

म्यान से छोटी-सी तलवार निकालकर अपना बलिदान देने के लिए तत्पर बना हुआ वह किशोर कहने लगा :

"हजारों के आँसू पोंछनेवाले, हजारों दिलों में शांति देनेवाले और लाखों नगरजनों के जीवन को पोसनेवाले राजा की आयु दीर्घ बने और उसके लिए मेरे सिर का बलिदान देना पड़े तो हे राज्यलक्ष्मी! ले यह बलिदान।"

तलवार के एक ही प्रहार से किशोर ने अपना सिर अर्पण कर दिया।

बच्चों में शक्ति होती है। इन बच्चों में से ही कोई विवेकानन्द बन सकता है, कोई गांधी बन सकता है, कोई सरदार वल्लभभाई बन सकता है कोई रामतीर्थ बन सकता है और कोई आसाराम भी बन सकता है।

राजा विक्रमादित्य का स्वभाव था कि किसी आदमी को किसी काम के लिए भेजकर वह क्या करता है यह जाँचने के लिए स्वयं भी छुपकर उसके पीछे जाते थे। आज भी किशोर के पीछे-पीछे वे छुपकर चल पड़े थे और किशोर क्या कर रहा था यह छुपकर देख रहे थे। उन्होंने किशोर का बलिदान देखा : 'अरे! किशोर ने मेरे लिये अपने प्राण भी दे दिये!' वे प्रकट होकर राज्यलक्ष्मी से बोले :

"हे राज्यलक्ष्मी! हे देवी! मेरे लिये प्राण देनेवाले इस बालक को आप जीवित करो। मुझे इस मासुम बच्चे के प्राण लेकर लम्बी आयु नहीं भोगनी है। मेरी आयु भले शांत हो जाय लेकिन इस बालक के प्राण नहीं जाना चाहिए। हे देवी! आप मेरा सिर ले लो और इस बच्चे को जिन्दा कर दो।" राजा ने अपने म्यान से तलवार निकाली तो राज्यलक्ष्मी आद्या देवी शक्ति ने कहा : "हाँ हाँ राजा विक्रम! ठहरो। आप आराम करो। सब ठीक हो जायेगा।"

विक्रमादित्य देवी को प्रणाम करके अपने महल में गये। देवी ने प्रसन्न होकर अपने संकल्पबल से किशोर को जिन्दा करके वापस भेज दिया। किशोर पहुँचा तो राजा अनजान होकर बिछाने में बैठ गये। उन्होंने पूछा :

"क्यों किशोर! क्या बात थी? इतनी देर क्यों लगी?"

तब वह किशोर कहता है : "राजा साहब! उस महिला को जरा समझाना पड़ा।"

"कौन थी वह महिला?"

"कोई महिला थी, महाराज! उसकी सास ने उसे

(अनु. पेज ३२ पर)

आरोग्यता का मूल प्रसन्नता - हास्य - निश्चिन्तता

प्रसन्नता और निश्चिन्तता आरोग्यता का मूल है। सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति तो है ही, तदुपरान्त हररोज प्रसन्नतापूर्वक ३० मिनट तक हँसने से मनुष्य की रोगप्रतिकारक शक्ति भी बढ़ती है। रक्तवाहिनियों में रक्त का प्रवाह यथायोग्य बनता है। रक्त में से विषाक्त तत्त्व दूर होते हैं। हररोज हँसने से, प्रसन्न रहने से, सत्संग के विचारों में डूबने से रोगी के कैसे भी रोग में शीघ्र लाभ होता है।

भोजन से पूर्व पैर गिले करने से तथा १० मिनट तक हँसकर फिर भोजन का ग्रास लेने से भोजन अमृत बनता है । पूज्यश्री लीलाशाह बापू भोजन के पहले हास्य करके बाद में ही भोजन करने बैठते थे। वे ९३ वर्ष तक नीरोग रहे थे।

कैसे भी खतरनाक रोग में...

रोगी को कैसा भी खतरनाक रोग हो, केन्सर, ब्लड्प्रेशर, हृदय के वाल्व का रोग, मस्तिष्क के भयंकर रोग जिनमें डॉक्टर, हकीम लोगों ने हार मान ली हो, ऐसे रोगों से ग्रस्त रोगी को सोचना चाहिये कि :

''जो बीमार होता है वह मैं नहीं हूँ। बीमार यह देह है। मैं तो चैतन्य हूँ। मैं तो अमर आत्मा हूँ। मैं व्यापक परमात्मा से भिन्न नहीं हूँ। हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...' इस प्रकार हरि ॐ के उच्चारण के साथ आत्म-विचार करना चाहिये।

दूसरी बात : प्रात:काल में, मध्यान्ह काल में और सायं काल में एक बन्द कमरे में सीटी बजाकर ३० मिनट तक हँसना। हँसी न आये तो भी झूठ-मूठ हँसो।

तीसरी बात : तुलसी के पत्तों का रस १० ग्राम और सच्चा शहद १० ग्राम अथवा तुलसी के पत्तों का रस १० ग्राम और ४०-५० ग्राम ताजा दही (जो खट्टा न हो। हो सके तो गाय का दही) सुबह, दोपहर और शाम को लेना।

चौथी बात : गले में तुलसी के पत्तों की ताजी माला बनाकर पहनना और २४ घण्टों के बाद रोज प्रात:काल में माला बदलना।

इतना करने से कैसे भी रोग में, डॉक्टरों ने हार मान ली हो ऐसे रोग में भी चमत्कारिक लाभ होता है।

सूर्य का पाचनशक्ति-वर्धक और बुद्धिविकासक प्रभाव

उत्तरायण के शिविर में
पू. बापू के सत्संग-प्रवचन में से

हररोज प्रात:काल में सूर्योदय से पहले स्नानादि करके तैयार हो जायें। फिर खुल्ले मैदान में अथवा घर की छत पर जहाँ सूर्य का प्रकाश ठीक प्रकार से आता हो वहाँ नाभि का भाग खुल्ला करके सूर्यदेव के सामने खड़े रहो । तदनन्तर सूर्यदेव को प्रणाम करके, आँखें बन्द करके चिन्तन करो कि :

'जो सूर्य की आत्मा है वही मेरी आत्मा है। तत्त्वत: दोनों की शक्ति समान है।'

फिर आँखें खोलकर नाभि पर सूर्य के नीलवर्ण का आवाहन करो और इस प्रकार मंत्र बोलो :

ॐ सूर्याय नम:।
ॐ मित्राय नम:।
ॐ रवये नम:।
ॐ भानवे नम:।
ॐ खगाय नम:।
ॐ पुष्णे नम:।

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
ॐ मरिचये नमः।
ॐ आदित्याय नमः।
ॐ सवित्रे नमः।
ॐ अर्काय नमः।
ॐ भास्कराय नमः।
ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नमः।

सूर्यपूजा के लाभ

यादशक्ति, निर्णयशक्ति, पाचनशक्ति विकसित होती है। सर्दी, खाँसी, श्वास जैसे रोग वायु और कफ के कारण हों तो दूर होते हैं। शीत प्रकृतिवालों को सदैव सूर्यपूजा करना चाहिये। मासिक स्राव के दिनों में तथा सगर्भावस्था में महिलाएँ सूर्यपूजा न करें। गर्मियों के दिनों में आठ बजे तक तो पूजा कर ही लेना चाहिये। अन्य ऋतुओं में नव बजे तक पूजा कर लेना चाहिये। वर्षा ऋतु में जब सूर्य निकले तब सूर्यपूजा कर सकते हैं।

हररोज भोजन के बाद मंगल का ग्रह, अग्निदेव, सूर्यदेव, अश्विनीकुमार और अगस्त्य मुनि का चिन्तन किया जाय तो भोजन जल्दी पच जाता है।

आज्ञाचक्र पर सूर्य की किरणों का आवाहन किया जाय तो बुद्धि का विकास होता है। नाभि पर आवाहन करने से मणिपुर चक्र का विकास होता है, बुद्धि का विकास होता है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है। जो सदा सरदी व खाँसी से पीड़ित रहता हो, जिसकी शीत प्रकृति हो, भोजन ठीक से पचता न हो उसे विशेष रूप से अपनी नाभि पर सूर्य के नीलवर्ण का आवाहन करके पूजा करना चाहिये।

हररोज प्रसन्नतापूर्वक ३० मिनट तक हँसने से मनुष्य की रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। रक्तवाहिनियों में रक्त का प्रवाह यथायोग्य बनता है। रक्त में से विषाक्त तत्त्व दूर होते हैं। हररोज हँसने से, प्रसन्न रहने से, सत्संग के विचारों में डूबने से रोगी के कैसे भी रोग में शीघ्र लाभ होता है।

जब आपका शरीर स्वस्थ रहता है तब आपका चरित्र भी बहुत ठीक होता है और आप प्रलोभनों का सामना कर सकते हैं। आपको अगर कोई रोग, कोई व्याधि घेर लेती है, आपका पेट तन्दुरुस्त नहीं रहता है तो ऐसी दशा में ज़रा-सी बात आपको क्षुब्ध, व्यग्र और अस्तव्यस्त कर सकती है।

टोपी एवं पगड़ी स्वास्थ्य-रक्षक है

नियमित ऋतु के मुताबिक अथवा सामान्यतः टोपी या पगड़ी पहनने से बाल के रोग नहीं होते, सिरदर्द नहीं होता, आँख व कान के रोग नहीं होते।

पूर्व काल में हमारे दादा-परदादा नियमित रूप से टोपी या पगड़ी पहनते थे। महिलाएँ हमेशा सिर पर ओढकर रखती थी। अतः उन लोगों को समय से पूर्व बाल सफेद होना, सिर पर टाल पड़ना, सरदी होना, सिरदर्द होना, आँख, कान, नाक के रोग आदि कम होते थे। आज फैशन के कारण या अज्ञान के कारण सिर खुल्ले रखने से बाल, सिर, आँख, कान, नाक के रोग बहुत बढ़ गये हैं। सिर में हवा लगने से, गरमी एवं बारिश का पानी लगने से अनेक रोग होते हैं।

अधिक भोजन करने का परिणाम

– स्वामी रामतीर्थ

वेदान्त के अनुसार अधिक भोजन करना और जो भोजन अजीर्ण, सुस्ती और चिड़चिड़ापन पैदा करता हो ऐसा भोजन करना सब पापों की जड़ है। यही छोटी-सी त्रुटि अधिकांश पापों का कारण है। अजीर्ण के द्वारा आपकी प्रकृति बिगड़ जाती है और फिर आप हर एक प्रकार के पाप के गर्त्त में उतरने लगते हो।

वेदान्त के अनुसार आपके परम आनन्द-स्वरूप या दिव्यानन्द को जो कुछ रोकता है या पीछे ढकेलता है वही पाप है। इस प्रकार आपके अधिकांश पापों का मूल प्रायः आपके भोजन पर आधारित है। अन्य धर्म-प्रचारक इस बात पर उतना जोर

नहीं देते जितना 'राम' देना चाहता है। भोजन विषयक यह बात एक ठोस तथ्य है।

राम केवल अपने ही अनुभव से कह सकता है कि यदि हमारा पेट (आमाशय) आराम से रहता है, हमारा स्वास्थ्य ठीक होता है तो हम अपनी चित्तवृत्ति को वश में कर सकते हैं।

जब आपका शरीर स्वस्थ रहता है तब आपका चरित्र भी बहुत ठीक होता है और आप प्रलोभनों का सामना कर सकते हैं। आपको अगर कोई रोग, कोई व्याधि घेर लेती है, आपका पेट तन्दुरुस्त नहीं रहता है तो ऐसी दशा में जरा-सी बात आपको क्षुब्ध, व्यग्र और अस्तव्यस्त कर सकती है। यह एक ठोस तथ्य है। बड़े आश्चर्य की बात है कि धर्मप्रचारक इस विषय की चर्चा करना अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझते हैं।

पेट में अधिक ठूंसना और अनुचित भोजन का आहार करना सारे पापों की जड़ है। जिस मनुष्य में इस प्रकार की प्रवृत्ति है वह वेदान्त की दृष्टि में बड़ा पातकी है। अतः अपने भोजन के बारे में सदा सावधान रहो।

*

स्वास्थ्य और शुद्धि

(महाभारत से)

दिन में एवं सन्ध्या के समय शयन आयु को क्षीण करता है।

उदय और अस्त होते हुए सूर्य-चन्द्र की ओर दृष्टि न करें।

दृष्टि की शुद्धि के लिये सूर्य का दर्शन करें।

सन्ध्या के समय जप-ध्यान के सिवाय कुछ भी न करें।

रात में अधिक भोजन न करें और दूसरों को भी न खिलायें।

रात में स्नान न करें एवं भीगे वस्त्र न पहनें।

ध्यानयोगी ठण्डे जल से स्नान न करें।

साधारण शुद्धि के लिये जल के दो आचमन करें।

सूर्य-चन्द्र के सामने कुल्ला, पेशाब आदि न करें।

मनुष्य जब तक मल-मूत्र का वेग धारण करता है तब तक अशुद्ध रहता है।

अपवित्रावस्था में और जूठे मुँह स्वाध्याय न करें और जप न करें।

सिर पर तेल लगाने के बाद हाथ धो डालें।

रजस्वला स्त्री के साथ बातचीत न करें। उसके सामने न देखें।

आसन को पैर से खिसकाकर उस पर न बैठें।

जूठे हाथ से मस्तक का स्पर्श न करें। बार-बार सिर पर पानी न डालें।

चान्द्रायण व्रत का आचरण किस कारण से करना चाहिए?

महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि :

१. मरणशौच तथा जन्मशौच का अन्न खा लेने पर...

२. पतित का अन्न और शूद्र का जूठा अन्न खा लेने पर...

३. ऊँटनी एवं भेड़ का दूध पी जाने पर...

४. ब्याहे हुए गौ का दस दिन के अन्दर दूध पी जाने पर...

५. पूजारी, पुरोहित और गोलक (विधवा स्त्री के जारकर्म से उत्पन्न पुत्र) का अन्न खा लेने पर...

६. जो द्विज एकोद्दिष्ट श्राद्ध का भोजन करता है उसे...

७. जो द्विज अधिक मनुष्यों की भीड़ में एवं फूटे बर्तन में खाता है उसे...

८. उपनयन संस्कार से रहित बालक, कन्या और स्त्री के साथ एक पात्र में भोजन कर लेने पर...

९. जो द्विज प्याज, गाजर, छत्राक और लहसुन खा ले उसे...

१०. रजस्वला स्त्री, कुत्ते और चाण्डाल का देखा हुआ अन्न खा लेने पर चान्द्रायण का व्रत करना चाहिए।

*

कलियुग में भी कल्पवृक्ष : वड़दादा

योगयात्रा

मैं वेटरनरी डॉक्टर हूँ। आश्रम में गायों की सेवा करने का अवसर कभी-कभी ढूंढ़ लिया करता हूँ।

आश्रम के आंगन में पू. बापू के करकमलों द्वारा आरोपित वट का एक हराभरा लहलहाता वृक्ष है। यह वटवृक्ष अपनी परिक्रमा करनेवालों की आकांक्षा पूर्ण किया करता है। मैं व्यवसाय से विज्ञान का जीव हूँ। फिर भी पूज्यश्री के सम्पर्क से अनेकों बार ऐसे प्रसंगों का साक्षी भी रहा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि वड़दादा में अलौकिक शक्ति निहित है। इस श्रद्धा से मैं स्वयं भी अपने को मुक्त नहीं रख पाया हूँ। मुझे स्वयं भी ऐसे अनेक अनुभव प्राप्त हुए हैं।

एक दिन की बात है। आश्रम की एक गाय के एक थन में से दूध के बदले लहू आने लगा था। अन्य तीन थनों में से बराबर दूध निकलता, पर चौथे थन में शायद कुछ पीड़ा थी। उसके लिए मैंने अनेकों उपचार किए, गोली और इन्जेक्शन दिये, पर कुछ भी फर्क नज़र नहीं आया। मैंने अपनी सारी होशियारी और विद्या आजमा ली, पर सब व्यर्थ। काफी दिनों तक उस थन से लहू प्रवाहित होता रहा। मैं थक गया, बैठ गया। मैंने अपने हथियार डाल दिये और वड़दादा की शरण में जा पहुँचा। प्रेम से उनकी प्रदक्षिणा की। गाय के दर्द के निवारण के लिए उनसे प्रार्थना की। उन्होंने मेरी प्रार्थना सुन ली। दो-तीन दिन में ही गाय के थन से लहू का आना बंद हो गया और धीरे-धीरे पूर्ववत् शुद्ध दूध आने लगा। उसके बाद फिर कभी कोई ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं हुई।

मैंने अपनी सारी होशियारी और विद्या आजमा ली, पर सब व्यर्थ। काफी दिनों तक उस थन से लहू प्रवाहित होता रहा। मैं थक गया, बैठ गया। मैंने अपने हथियार डाल दिये और वड़दादा की शरण में जा पहुँचा।

दूसरा प्रसंग भी कुछ ऐसा ही रोमांचक रहा। दो-ढ़ाई वर्ष की बछिया के पेट के एक भाग में खूब सूजन आ गई। मैंने काफी दवा-दारू की। कोबा और प्रेम दरवाजा (अहमदाबाद) के पशुचिकित्सालयों के चिकित्सकों ने भी काफी प्रयत्न किये, पर उस बछिया को कुछ भी राहत नसीब न हुई। पेट की सूजन बढ़ती गई, और उसमें पानी भरता रहा। हमको पता था कि ऐसे रोग पशु के लिए प्राणघातक होते हैं। फिर भी हृदय में वड़दादा के प्रति भक्ति-भावना संचित करके मैंने उनकी प्रदक्षिणा की, उनसे बारम्बार प्रार्थना की। मेरी सद्भावना परिपूर्ण हुई और बेचारी बछिया की जान बची, वह स्वस्थ हो गई। वह बछिया आज भी आश्रम में है। अपनी तन्दुरुस्ती से मुझे उस घटना की प्रतीति कराती रहती है।

सुना था कि कल्पवृक्ष के नीचे जाकर याचक उससे जो भी याचना करता है वह अवश्य परिपूर्ण होती है। आज कल्पवृक्ष की वही सिद्धि, वही सामर्थ्य पू. बापू ने अपने करकमलों द्वारा आरोपित वटवृक्ष में, अपने वड़ बादशाह में भर दिया है। ऐसा मुझे महसूस हो रहा है।

– डॉ. लालजीभाई डी. पटेल
पशु चिकित्सक, साबरमती।

*

पड़ी दृष्टि और उतरा पार

आठ वर्ष के सैनिक सेवाकाल में मैं शराब और बीड़ी-सिगरेट पीने एवं मछली-मांस खाने का आदी बन गया था। नौकरी से अवकाश पाकर जब घर आया उसके छः महीने पश्चात् ही पत्नी का देहावसान हो गया। फिर तो मैं पहले से भी कहीं ज्यादा शराब की संगत में डूबता गया। चौबीसों घंटे शराब के नशे में रहने लगा। मेरे माता-पिता

और बंधु-बांधवों ने उस नशे से मुझे मुक्त करने के अनेकों उपाय किये। मैंने भी अनेकों बार शपथ ली, पर इस नशे के राक्षसी पाश से छुट न पाया। शायद इसीलिए जबरदस्ती दूसरा विवाह भी करवाया गया, फिर भी मेरे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। नशे की बरबादी से मैं अपने आपको न बचा सका।

सुना था कि कल्पवृक्ष के नीचे जाकर याचक उससे जो भी याचना करता है वह अवश्य परिपूर्ण होती है। आज कल्पवृक्ष की वही सिद्धि, वही सामर्थ्य पू. बापू ने अपने करकमलों द्वारा आरोपित वटवृक्ष में, अपने वड़ बादशाह में भर दिया है। ऐसा मुझे महसूस हो रहा है।

जिस समय मेरे जीवन की गाड़ी बरबादी के राजमार्ग पर तेजी से भागी जा रही थी, उस समय डुम्मस में परम पूज्य श्री गुरुदेव पूज्यपाद आसारामजी बापू का शुभ आगमन हुआ। पूज्यश्री के प्रथम दर्शन से ही मेरे सारे व्यसन - शराब, बीड़ी, सिगरेट, मछली, मांस आदि सब साँप की केंचुल की तरह मुझे छोड़ सहज ही अलग हो गये। प्रथम दर्शन में ही मेरे जीवन की तमाम मैल धुल गई।

एक दिन की बात है। मेरे संबंधी के घर पार्टी थी। उसमें मुझे शराब पीने के लिए मित्रों ने खूब आग्रह किया, परंतु मैं टस से मस न हुआ। क्योंकि अब मैं पुराने नशे का गुलाम नहीं रह गया था। सद्गुरुदेव की अमृतवाणी में नहा-नहाकर मैं पावन हो चुका था क्योंकि गुरुदेव की

मस्त आँखों ने पिलाई है
मुझे ऐसी शराब।
बेखुदी में मस्त हूँ
मिट गये सारे हिजाब।
हो गई रहेमत तेरी
सद्गुरु रहेमत छा गई॥

पू. बापू का सत्संग और सान्निध्य पा लेने के बाद अब मैं जब भी ध्यान में बैठता हूँ तब अपार आनंद का अनुभव करता हूँ। मूलाधार चक्र में झनझनाहट के साथ मानो बिजली का झटका लगता हो, ऐसा बारम्बार महसूस करता हूँ। ज्यों ही पूज्यश्री का दर्शन पाता हूँ कि मैं तुरंत मस्ती और आनंद में निमग्न हो उठता हूँ।

गुरुदेव...! गुरुदेव...!! आपने मुझ पर अपनी एक सहज दृष्टि फेरी और मैं पार उतर गया... निहाल हो गया !!!

– अरविंद जे. वाजा
सैयदपुरा, धोबी शेरी, सुरत।

*

ऐसा धन मत कमाओ जिसमें गरीब तबाह होते हों, उनके मुँह का रूखा-सूखा टुकड़ा छिनता हो, उनके बाल-बच्चों का जीवन बिगड़ता हो, उनका भविष्य अन्धकारमय बन जाता हो। धन तो चला ही जायगा, गरीबों का दारुण दुःख, उनका आर्त्तनाद, उनकी सन्ताप-ज्वाला प्रलयाग्नि बनकर तुम्हारे सुख के नगर को भस्मीभूत कर डालेगी। अतः शोषण, परपीड़न के बजाय परहित और समाज के गरीबों के पोषण को ध्यान में रखकर ही व्यवहार करो।

*

अन्तर्मुख होकर आत्मानन्द का अमृतपान करने की जिज्ञासा आप में जगी है क्या ? भीतर का मार्ग आप नहीं जानते ? भीतर के खजाने की कुँजी खो गई है ? तो खोज लो किसी ब्रह्मनिष्ठ सत्पुरुष का शरण। वे आपको भीतर का मार्ग दिखा देंगे। भीतर के खजाने की कुँजियाँ आपको हस्तगत करा देंगे।

संस्था समाचार

गुरुपूनम के बाद आया सावन का महीना। सावन का महीना यानी पर्वों की परंपरा।

भारतीय संस्कृति में पर्व सहज ही समाविष्ट हैं। भारत का जनजीवन पर्वों के साथ घुलमिल गया है।

हमारे आश्रम में भी विभिन्न पर्व मनाये जाते हैं। भक्तों का विशाल समुदाय और सद्गुरु की विशेष रसपूर्ण, रहस्यपूर्ण एवं माहात्म्यपूर्ण उपदेश देनेवाली अमृतवाणी... यह सबसे महत्त्वपूर्ण आकर्षण बन जाता है।

रक्षाबन्धन अहमदाबाद के आश्रम में

गुरुपूर्णिमा के बाद प्रथम पर्व के प्रसंग पर परम पूज्य गुरुदेव अहमदाबाद के आश्रम में विराजमान थे। आश्रम में रक्षाबन्धन का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। बहनें भाइयों को राखी बाँधती हैं यह तो ठीक है। यह सामाजिक व्यवस्था है, संरक्षण की व्यवस्था है। किन्तु जन्म-मृत्यु के विषम चक्कर से छूटने के लिये शिष्य सद्गुरु को राखी अर्पण करते हैं और अपनी रक्षा की याचना करते हैं। यह रक्षाबन्धन पर्व का आध्यात्मिक पहलू है।

सचमुच रक्षण करने योग्य तो अपना हृदय रूपी धन है। श्रुति कहती है :

रक्षताम् रक्षताम् कोषानामपिकोषं हृदयकोषम् ।

इस हृदय-धन की रक्षा करने की कूँजी, युक्ति, हिम्मत एवं मार्गदर्शन सद्गुरु देते हैं। गुरुपूर्णिमा के बाद शिष्यों को समर्पण, साधना और स्नेह का स्मरण करानेवाला यह उत्सव प्रेम, निष्ठा, निष्कामता और निर्विकारिता की प्रेरणा दे जाता है।

जन्माष्टमी सुरत के आश्रम में

दिनांक २१ अगस्त के दिन सुरत के आश्रम में जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया। बारिश के समय में हर जगह थोड़ी बहुत सुविधा-असुविधा तो होती ही है। फिर भी परमात्मा के प्यारे हरि-गुरुदर्शन के मस्ताने साधक भारत भर से एवं विदेशों से भी यहाँ उमड़ पड़े थे। जन्माष्टमी का श्रीकृष्ण-जन्म महोत्सव भी खूब धूमधाम से मनाया गया। व्यासपीठ की दोनों ओर मक्खनचोरी की एवं नवजात बालकृष्ण को यमुना पार ले जानेवाले वसुदेवजी की झाँकियाँ सजायी गई थी। विशाल पण्डाल में दही-मक्खन की मटकियाँ बँधी हुई थी जिसकी डोर पू. बापू के हाथ में थी।

श्रीकृष्ण-जन्म के तात्त्विक रहस्ययुक्त प्रवचन के बाद पूज्य बापू ने डोर खींचकर दही मक्खन की मटकियाँ छलका दीं। मटकीफोड़ कार्यक्रम का आनन्द जिसने पाया हो वही जानता है। किसीके सिर तो किसीके मुँह, गाल, नाक, आँख, कपड़े आदि सब दही एवं मक्खन से लिप्त। मक्खन का प्रसाद लूटने में दीवाने बने हुए साधकों को अपने देह की एवं कपड़ों की कोई चिन्ता नहीं थी। सबके हृदय में पू. बापू के हाथ से कृष्ण-जन्म का प्रसाद लूटने की उत्कट लालसा थी। पूज्य बापू ने भी व्यासपीठ से नीचे उतरकर भक्तों के बीच खूब मक्खन लूटाया।

जन्माष्टमी के बाद दिनांक १३ सितम्बर से पूज्यश्री का सत्संग समारोह भुज (कच्छ) में था। दिनांक ८ सितम्बर के दिन शाम को पूज्यश्री अहमदाबाद के आश्रम से भावनगर के आश्रम में पधारे। वहाँ से राजकोट प्रस्थान किया। राजकोट के आश्रम में दिनांक १२ सितम्बर को पूर्णिमा के दिन स्थान स्थान से पूनम के दर्शन के वृतधारी साधक, भक्त पहुँच गये।

भुज (कच्छ) में सत्संग समारोह

दिनांक १३ सितम्बर से भुज (कच्छ) में अभूतपूर्व दिव्य सत्संग समारोह आयोजित किया गया। पूज्य बापू कथा-पण्डाल में पधारें उससे पहले ही विशाल पण्डाल संत-दर्शन के प्यासे भक्तों से खचाखच भर गया। दूसरे दिन एवं तीसरे दिन भी पण्डाल बड़ा बनाना पड़ा।

गांधीधाम (कच्छ) में सत्संग समारोह

दिनांक १७ से २१ सितम्बर तक गांधीधाम (कच्छ) में पूज्य बापू का सत्संग समारोह आयोजित किया गया। इससे गांधीधाम में एक नई जागृति आ गई। पूज्यश्री ने गांधीधाम में दिनांक २० शाम को झूलेलाल मंदिर का उद्घाटन किया। संत श्री आसारामजी सिंधी मार्केट एवं ग्रोथ सेन्टर का शिलारोपण भी किया। दिनांक २२ के दिन सुबह १० बजे आदीपुर में एक वृद्धाश्रम का भी शिलारोपण किया। उस वृद्धाश्रम में पू. बापू की प्रेरणा से वृद्धों को निवास, भोजन एवं आध्यात्मिक भक्तिभाव से पूर्ण कार्यक्रम मिलते रहें और वृद्धों का आखिरी जीवन भक्तिमय बने ऐसी व्यवस्था की जायगी।

राजकोट के आश्रम में वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर और आत्म-साक्षात्कार दिन महोत्सव

दिनांक २५ से २८ सितम्बर तक राजकोट के आश्रम

में वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर का आयोजन किया गया। राजकोट शहर से करीब चौदह कि. मी. न्यारी बांध के पास मनोहर वातावरण में शिविर की व्यवस्था की गई। आश्रम के समग्र एप्रोच रोड़ को कमानों से सजाया गया। राजकोट के साधकों ने एक सुन्दर विशाल पक्का सत्संग भवन बनाया है। उसका उद्‌घाटन भी शिविर के प्रसंग पर किया गया।

आसोद सुद दूज, पूज्यश्री के आत्म-साक्षात्कार दिन का महोत्सव भी खूब धूमधाम से मनाया गया। शिविर में सत्संग, ध्यान और कीर्तन के नये नये प्रयोग किये गये।

शहर से आश्रम तक आने के लिये बस की व्यवस्था की गई थी।

हरि-कीर्तन, हरि-ध्यान का आनन्द तो जिसने अनुभव किया हो वही जानता है। राजकोट से १४ कि. मी. दूर और फिर भी इतना विशाल जन-समूह उमड़ पड़ा कि आश्रम का हॉल और हॉल से ढ़ाई गुना बड़ा पण्डाल भी छोटा पड़ गया।

मन्दसौर (म. प्र.) में सत्संग समारोह

दिनांक १ से ४ अक्तूबर तक मन्दसौर में सत्संग समारोह का आयोजन किया गया था। एक लाख आदमी बैठ सकें ऐसा विशाल पण्डाल लगाया गया था। वह पण्डाल भी छोटा पड़ गया। समग्र नगर पोस्टर्स, स्वागत बेनर्स, होर्डींग्स से सजाया गया था। नगर के मार्गों पर ध्वजा एवं तोरण बाँधे गये थे। दिनांक ४ के दिन दोपहर को पूज्यश्री की विराट एवं भव्य शोभायात्रा निकाली गई। हजारों लोग उसमें शामिल हुए थे। श्रद्धालु जनों ने मकानों की छतों पर से, झरोखों से पूज्यश्री पर पुष्पवृष्टि की। मन्दसौर नगर के लिये 'न भूतो न भविष्यति' जैसा भव्य सत्संग समारोह बन गया।

सोनकच्छ में सत्संग

दिनांक ५ अक्तूबर के दिन सोनकच्छ में एक ही दिन के लिए पूज्य बापू का सत्संग समारोह आयोजित किया गया। शोभायात्रा भी निकाली गई। उसमें भी दस पन्द्रह हज़ार भक्तों ने विभिन हरिनाम धूनों एवं जयनादों से गगन गूंजा दिया था।

इन्दौर आश्रम में दो शिविरें

दिनांक ६ से ८ अक्तूबर इन्दौर में संत श्री आसारामजी गुरुकुल, ध्यान केन्द्र एवं आश्रम में विद्यार्थियों के लिए विशेष ध्यान योग तालीम शिविर का आयोजन किया गया। इन्दौर और मध्य प्रदेश के विद्यार्थियों के लिये यह जीवन निर्माण का अनुपम अवसर था। पूज्य बापू के सानिध्य में इस शिविर ने विद्यार्थियों में अच्छा आकर्षण जमाया।

इन्दौर की भूमि में विद्यार्थियों की जीवनशक्ति के विकास का, जीवन में हिम्मत, उत्साह एवं ईश्वरीय प्रेम के प्राकट्य का यह प्रथम सफल प्रसंग था। वर्षा के दिन होने के कारण शिविरार्थी सीमित संख्या में आयें इस हेतु शिविर की घोषणा आखिरी दिनों में की गई थी।

दिनांक ९ से ११ अक्तूबर तक वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर का आयोजन किया गया। शरदपूर्णिमा के पावन पर्व पर बिलावली तालाब के तट पर ध्यान, कीर्तन एवं दूध-पोहे के प्रसाद का कार्यक्रम रखा गया। विद्यार्थियों के लिए आकर्षक आतशबाजी का कार्यक्रम भी बिलावली तालाब पर रखा गया था।

कोटा (राज.) में योगलीला की भव्य प्रदर्शनी

दिनांक ६ अक्तूबर से एशिया में सबसे बड़े दशहरे मेले का आयोजन कोटा के दशहरा मैदान में किया गया। २० दिन तक चलनेवाले इस मेले में कोटा की योग वेदान्त सेवा समिति ने पूज्य गुरुदेव के जीवन-दर्शन का भव्य कार्यक्रम बनाया। पूज्यश्री की जीवनलीला पर आधारित चित्र-प्रदर्शनी एवं वीडियो प्रोजेक्टर द्वारा पूज्यश्री का सत्संग समग्र मेले में सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र बना रहा। कोटा की योग वेदान्त सेवा समिति द्वारा निर्मित इस भव्य आयोजन का उद्‌घाटन राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री हरिकुमार औदिच्य ने दीप प्रकटाकर किया। उन्होंने पूज्यश्री की योगलीला की चित्र-प्रदर्शनी का निरीक्षण भी बड़े चाव से किया।

उद्‌घाटन के समय अतिथि विशेष के रूप में कोटा रेन्ज के पुलीस उप-महानिरीक्षक श्री हरिनारायण मीणा तथा नगर परिषद प्रशासक श्री धर्मेन्द्र भटनागर उपस्थित रहे थे।

यहाँ उल्लेखनीय है कि इस योगलीला प्रदर्शनी ने सिंहस्थ कुंभ, उज्जैन में राष्ट्रीय स्तर पर अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

कार्यक्रम में उद्बोधन करते हुए शिक्षामंत्री श्री औदिच्य ने कहा :

''संचित पुण्यों के बल से ही सद्‌गुरु की प्राप्ति होती है। श्री आसारामजी महाराज एक प्रभावशाली संत हैं। उनकी प्रेरणा से हज़ारों लाखों साधक तत्त्वदर्शन के लिए अग्रसर हो रहे हैं।''

स्वामीजी के सत्संग के प्रभाव पर बोलते हुए श्री औदिच्य ने कहा :

''मैं जब दिल्ली में बीमार था तब स्वामीजी की

वीडियों कैसेट ने मुझे ऐसी प्रेरणा दी कि मेरी आधी बीमारी तत्काल दूर हो गई।''

कार्यक्रम में श्री धर्मेन्द्र भटनागर और श्री हरिनारायण मीणा ने भी सम्बोधन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश गौतम, एडवोकेट ने किया और श्री योग वेदान्त सेवा समिति के अध्यक्ष श्री हरीश अग्रवाल ने सबको धन्यवाद दिया।

*

दैनिक मध्यांचल

गुरुवार १७ सितंबर १९९२

मक्सी में हुआ हरिओम व पू. आसारामजीमय वातावरण

५० गांव के हजारों नर-नारियों को मक्सी की सड़कों पर नाचने को मजबूर कर दिया।

मक्सी (निप्र)।

श्री योग वेदांत सेवा समिति, मक्सी के तत्त्वावधान में 'भजन संध्या' का दो दिवसीय कार्यक्रम नया बाजार चौराहे पर हुआ, जिसमें संत श्री आसारामजी सत्संग मंडल रतलाम को आमंत्रित किया गया। रतलाम से आई करीब ४५ सदस्यों की इस टोली में महिलाएं भी शामिल थीं। विश्वविख्यात संत श्री आसारामजी महाराज को समर्पित इस कार्यक्रम के अंतर्गत दोनों दिन प्रभात फैरी निकाली गई, जिसमें करीब तीन-चार हजार नर-नारियों ने भाग लिया। मक्सी जैसे छोटे नगर में करीब २०० स्वागत द्वार एवं करीब सभी घरों की छतों से गुलाल एवं पुष्पों की वर्षा करके प्रभात फैरी पर मक्सीवासियों ने अपना निर्मल प्यार बरसाया। पूज्यश्री की चरणपादुका का पूजन स्थान-स्थान पर किया गया।

सत्संग मण्डल रतलाम की तालबद्ध भजनों की धुनों ने मक्सी में पधारे हुए लगभग ५० गांव के हजारों नर-नारियों को मक्सी की सड़कों पर नाचने को मजबूर कर दिया। मधुर-मधुर नाम हरि-हरि ओम की पावन धुन पर हर कोई थिरकने को मजबूर हो जाता।

संतश्री के शिष्यों पर गुरुकृपा का प्रभाव तब देखने को मिलता था जब उनके सम्पर्क में आने वाले रास्ते चलते हुए लोग भी रुककर गुरुभक्तों के साथ कीर्तन की धुन पर झूमने लगते और इस बात को भूल जाते कि हम घर से किस काम के लिये निकले थे।

नयाबाजार चौराहे पर बने विशाल पण्डाल में रात्रि ७.३० से सत्संग, ध्यान एवं कीर्तन आयोजित किया गया जिसमें हजारों नर-नारियों ने दोनों दिन सत्संग-लाभ लिया एवं कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

पूज्यश्री के शिष्यों द्वारा 'गुरुपद्धति' से ध्यान कराया गया। जनता ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि मक्सी शहर का वातावरण इस प्रकार बन गया मानों पूज्य श्री बापू आसारामजी स्वयं पधारे हैं।

मक्सी की जनता को पिछले बिस वर्षों में इस प्रकार का माहौल देखने को नहीं मिला। श्री योग वेदान्त सेवा समिति द्वारा पिछले ८ दिनों से गाँव-गाँव जाकर प्रचार किया जा रहा था। समिति ने सभी नर-नारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

'परम पूज्य गुरुदेव आसारामजी का कार्यक्रम मक्सी नगर में हो' इस बात का संकल्प समिति ने लिया एवं बाहर से पधारी हुई जनता को आश्वासन दिया कि पूज्य बापू शीघ्र ही मक्सी पधारेंगे।

पूज्य संतश्री के चित्र पर माल्यार्पण समिति के अध्यक्ष श्री पंकज अग्रवाल एवं उनके सहयोगी श्री पन्नालाल लक्ष्मण ने किया। श्रद्धालु जनों का आभार समिति के प्रचारमंत्री श्री कृष्णकांत नागर (पत्रकार) ने माना।

*

पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रम :
गौहाटी (आसाम) में सत्संग समारोह

दिनांक : १४ से २० दिसम्बर

समय : सुबह ९ से ११ दोपहर ३ से ५.

स्थान : श्री गौहाटी गौशाला प्रांगन, आठगाँव.

(पेज नं. २१ से जारी...)

डाँटकर घर से निकाल दिया था। मैं उसको सास के घर ले गया और समझाया कि इस प्रकार अपनी बहू को परेशान करोगे तो मैं महाराज साहब को शिकायत कर दूँगा। सास-बहू दोनों के बीच समझौता कराके आया । इसमें थोड़ी देर हो गई। और कुछ नहीं था । आप आराम करें महाराज !''

राजा विक्रमादित्य छलांग मारकर खड़े हो गये और किशोर को गले लगा दिया। बोले :

''अरे बेटा ! तू धन्य है ! इतना शौर्य... इतना साहस...! मेरे लिये प्राण कुर्बान कर दिये और वापस नवजीवन प्राप्त किया ! इस बात का भी गर्व न करके मुझसे छिपा रहा है ! किशोर... किशोर... तू धन्य है ! तूने मेरी उत्कृष्ट सेवा की फिर भी सेवा करने का अभिमान नहीं है। बेटा ! तू धन्य है !''

सेवा करना लेकिन दिखावे के लिए नहीं अपितु भगवान को रिझाने के लिए करना। ध्यान करना लेकिन भगवान को प्रसन्न करने के लिए। कीर्तन करना लेकिन प्रभु को राजी करने के लिये। भोजन करें तो भी 'अंतर्यामी परमात्मा मेरे हृदय में बिराजमान हैं उनको मैं भोजन करा रहा हूँ... उनको भोग लगा रहा हूँ...' इस भाव से भोजन करें। ऐसा भोजन भी प्रभु की पूजा बन जाता है।

बच्चों में शक्ति होती है। इन बच्चों में से ही कोई विवेकानन्द बन सकता है, कोई गांधी बन सकता है, कोई सरदार वल्लभभाई बन सकता है कोई रामतीर्थ बन सकता है और कोई आसाराम भी बन सकता है। कोई अन्य महान योगी, संत भी बन सकता है।

आपमें ईश्वर की असीम शक्ति है। बीज के रूप में वह शक्ति सबसे भीतर निहित है। कोई बच्ची गार्गी बन सकती है कोई मदालसा बन सकती है।

मनुष्य का मन और मनुष्य की आत्मा इतनी महान है कि यह शरीर उसके आगे अति छोटा है। शरीर की मृत्यु तो होगी ही, कुछ भी करो। शरीर की मृत्यु हो जाय उसके पहले अमर आत्मा के अनुभव के लिए प्राणिमात्र की यथायोग्य सेवा कर लेना यह ईश्वर को प्रसन्न करने का मार्ग है।

आँख को गलत जगह न जाने देना यह आँख की सेवा है। जिह्वा से गलत शब्द न निकालना यह जिह्वा की सेवा है। कानों से गन्दी बातें न सुनना यह कान की सेवा है। मन से गलत विचार न करना यह मन की सेवा है। बुद्धि से हल्के निर्णय न लेना यह बुद्धि की सेवा है। शरीर से हल्के कृत्य न करना यह शरीर की सेवा है। जैसे अपने शरीर की सेवा करते हैं ऐसे दूसरों को भी गलत मार्ग से बचाना, उन्हें सन्मार्ग की ओर मोड़ना उनकी सेवा है।

ऐसा कोई नियम ले लो कि सप्ताह में एक दिन नहीं तो दो घण्टे सही, लेकिन सेवा अवश्य करेंगे। अड़ोस-पड़ोस के इर्दगिर्द कहीं कचरा होगा तो इकट्ठा करके जला देंगे, कीचड़ होगा तो मिट्टी डालकर सुखा देंगे। अपने इर्दगिर्द का वातावरण स्वच्छ बनायेंगे।

ऐसा भी नियम ले लो कि सप्ताह में चार लोगों को 'हरि ॐ... ॐ... गाये जा...' ऐसा सिखायेंगे। सप्ताह में एक दो साधकों को, भक्तों को भगवान के लाडले बनायेंगे, बनायेंगे और बनायेंगे ही।

यह नियम या ऐसा अन्य कोई भी पवित्र नियम ले लो। क्यों, लोगे न?

शाबाश वीर ! शाबाश ! हिम्मत रखो, साहस रखो । बार-बार प्रयत्न करो। अवश्य सफल होंगे... धन्य बनोगे ।

*

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91
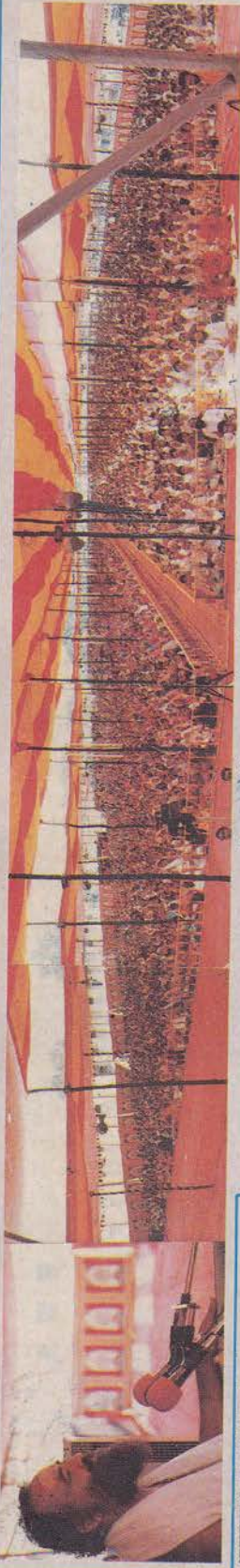
सत्संग समारोह, मन्दसौर (म.प्र.) में अपार जन-समूह उमड़ पड़ा...

मन्दसौर में सुरक्षादल के जवान पू. बापू को फौजी सलामी देकर अभिवादन करते हुए...

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, कोटा द्वारा श्री सद्गुरु जीवनलीला-दर्शन का भव्य कार्यक्रम। कोटा (राज.) में २० दिन चलनेवाले एशिया के सबसे बड़े दशहरे मेले में योगलीला प्रदर्शन और वीडीयो प्रोजेक्टर द्वारा सत्संग दर्शन। सम्पूर्ण मेले में सबसे बड़ी एवं आकर्षक इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री हरिकुमार औदिच्य ने किया। चित्र में श्री हरिकुमारजी प्रदर्शनी का निरीक्षण करते हुए...

मन्दसौर में सत्संग समारोह की पूर्णाहुति के दिन निकली हुई भव्य शोभायात्रा की झलकें...

मक्सी (म.प्र.)-रतलाम सत्संग मंडल के साधकों द्वारा भव्य प्रभातफेरी का आयोजन... संकीर्तन यात्रा में अनेकों श्रद्धालु उमड़ पड़े...

बांसवाड़ा (राज.) में गुरुदेव के नियमित वीडीयो सत्संग कार्यक्रम... दयानन्द विद्यामंदिर में हर रविवार को आयोजित वीडियो सत्संग कार्यक्रम में तन्मय [illegible]